वर्षम् - ८, अङ्कः - ९८ ओ३म् आषाढ़-श्रावणः-२०७३/ जुलाईमासः-२०१६

॥ आर्ष-ज्योतिः ॥

ज्योतिकृणोति सूनरी

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास
का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

You Tube

अब आप **Youtube** पर भी देख सकते हैं
Youtube/gurukul-poundha

मनीषीगण सम्बोधित करते हुए

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद्दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास

का

द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

आषाढ़-श्रावणः, विक्रम संवत् - २०७३

वर्ष : ८ | अंक : ९८ | जुलाई : २०१६ | मूल्य : ५.०० रुपये

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

मुख्य सम्पादक

डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक

चन्द्रभूषण आर्य

रवीन्द्र आर्य

❖

अतिथि सम्पादक

श्री मनमोहन कुमार आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक

ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक

ब्र. अनुदीप आर्य

ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड)

जंगमवाणी - ०९४११९०६१०४

ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in

website: www.pranawanand.org

सदस्यता शुल्क

आजीवन - १०००.०० रुपये

वार्षिक - ५०.०० रुपये/ एक प्रति - ५ रुपये

विषय-क्रमणिका

विषयः **पृष्ठः**

श्रीमद्दयानन्द-आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न, जिसकी प्रस्तुति आपके समक्ष उपस्थित है।

-श्री मनमोहन आर्य

नीमीतीरे सततसुखदे सर्वतो दर्शनीयम्,
पौन्धाग्रामे नगरनिनदाद् दूरमीक्ष्यं मनुष्यैः।
हैमे तुङ्गे शिखरिशिखरे शोभनोपत्यकायाम्,
आर्षज्योतिर्मठगुरुकुलं राजते संसृतौ मे।। **रवीन्द्रकुमारः**

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः

सम्पादक की कलम से...

आभार

हमने श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा-देहरादून के प्रेमियों के सहयोग से अपने प्रिय गुरुकुल का सत्रहवां तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक ३ जून से ५ जून, २०१६ तक सोल्लास सम्पन्न किया है। इस गुरुकुल ने अपने अनेक कार्यों व सफलताओं से न केवल देहरादून नगर में ही ख्याति अर्जित की है अपितु देश व विदेश में भी यह गुरुकुल चर्चित एवं प्रतिष्ठित है। गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य वही है जो महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में ब्रह्मचारियों की शिक्षा-दीक्षा का उल्लेख करते हुए कहा गया है। ब्रह्मचारियों की वेद व शास्त्र अनुमोदित शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुल पौंधा ने विगत १६ वर्ष की अवधि में अनेक योग्य ब्रह्मचारी देश व समाज को प्रदान किये हैं, जो अनेक स्थानों पर अपनी अर्जित विद्या का उपयोग करते हुए देश और समाज की सेवा कर रहे हैं। शिक्षा का कार्य एक सतत व निरन्तरता को लिये हुए उद्देश्य को सम्मुख रखकर कार्य करना होता है, जिससे वैदिक धर्म व संस्कृति के न केवल रक्षक अपितु इसका दिग-दिगन्त प्रचार व प्रसार करने वाले विद्वान् व प्रचारक तैयार किये जा सकें। हम अनुभव व आशा करते हैं कि जो ब्रह्मचारी गुरुकुल में अध्ययनरत हैं वा जो अपनी शिक्षा पूर्ण कर गुरुकुल से जा चुके हैं, वह ऋषि ऋण, गुरुकुल व आर्यसमाज के ऋण को ध्यान में रखते हुए उससे उऋण होने के लिए सावधान रहकर अपनी परिस्थितियों के अनुसार किसी न किसी प्रकार यथासम्भव वा अधिकतम वेद प्रचार का कार्य करने का प्रयास करेंगे। उनका यह कार्य न केवल उनकी बौद्धिक उन्नति करने के साथ उन्हें यश प्रदान करेगा वहीं इससे देश व समाज को भी लाभ होगा।

देहरादून में इस गुरुकुल की स्थापना आर्यजगत् के यशस्वी संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने आर्य-स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी के सुपुत्र श्रीकान्त वर्म्मा जी द्वारा दान में दी गई भूमि पर १६ वर्ष पूर्व की थी। तब से अब तक यह गुरुकुल प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इस अवधि में गुरुकुल में न केवल आवश्यकता के अनुसार छात्रावास, अध्ययन कक्ष, आचार्य निवास कक्ष, अतिथि कक्ष व सभागार आदि का निर्माण ही हुआ अपितु ब्रह्मचारियों की संख्या भी निरन्तर वृद्धि को प्राप्त हुई है। गुरुकुल की सफलता का अनुमान इसी बात से ही लगाया जा सकता है कि हम गुरुकुल में प्रवेश चाहने वाले सभी बच्चों को साधनों की सीमितता के कारण प्रवेश नही दे पाते। इस समय लगभग एक सौ ब्रह्मचारी गुरुकुल में शिक्षारत है जो न केवल संस्कृत आर्ष व्याकरण की ही शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं अपितु अन्य विषयों का भी ज्ञान प्राप्त कर रह हैं जो उनकी शिक्षा पूरी होने के बाद उन्हें समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करायेगा। आर्ष व्याकरण आदि की शिक्षा के साथ ही बच्चों को वेद और आर्यसमाज विषयक सभी विषयों का ज्ञान भी कराया जाता है। ब्रह्मचारी सन्ध्या व हवन में सम्मिलित होकर पूर्ण वैदिक रीति से जीवन यापन करते हैं। शिक्षा के साथ ही हमारे विद्यार्थी व्यायाम, जूडो-कराटे, शूटिंग (निशानेबाजी), वाद-विवाद सहित अनेक क्रीड़ाएं आदि में भी प्रवीण व अग्रणीय हैं। इनकी प्रतिभा व योग्यता के दर्शन हमारे उत्सवों में आने वाले धर्म वा गुरुकुल प्रेमीजन सभी कार्यक्रमों को देखकर करते हैं और उन्हें लगता है कि यहां के विद्यार्थियों को जो अभ्यास कराया गया है

वैसी शिक्षा व अभ्यास अन्य शिक्षण संस्थानों में शायद ही कराया जाता हो। अतः गुरुकुल पौंधा वैदिक धर्मी आर्यजनों का प्रिय गुरुकुल बन गया है।

इस गुरुकुल का यह भी सौभाग्य है कि आर्यजगत् के प्रायः सभी विद्वान व नेता समय-समय पर गुरुकुल में पधारते रहते हैं और गुरुकुल की गतिविधियों को देखकर प्रसन्न व सन्तुष्ट होने के साथ इसकी प्रशंसा भी करते है। हमारा सौभाग्य है कि आर्यजगत् के दो प्रसिद्ध विद्वानों पं. राजवीर शास्त्री और डॉ. रघुवीर वेदालंकार जैसे आर्यसमाज के दिग्गज विद्वानों ने समय समय पर यहाँ आकर ब्रह्मचारियों को पढ़ाया है। वर्तमान गुरुकुल झज्जर के पूर्व स्नातक व स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शिष्य आचार्य डॉ. यज्ञवीर जी यहां ब्रह्मचारियों को शिक्षित करने में अपनी सेवायें दे रहे हैं जिससे यह गुरुकुल प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

इस बार आयोजित गुरुकुल का वार्षिकोत्सव पूर्व उत्सवों की परम्परा में मील का पत्थर सिद्ध हुआ है। आर्यजगत् के सभी विद्वानों व भजनोपदशकों का पूर्ण सहयोग इस गुरुकुल को प्राप्त है। सभी विद्वान् व भजनोपदेशक वार्षिकोत्सव पर स्वात्म प्रेरणा से पधारते हैं व हमें सहयोग देते हैं जिससे इस वार्षिकोत्सव का स्वरूप अन्य संस्थाओं के उत्सवों से कुछ अधिक ही प्रभावशाली अनुभव होता है। इस प्रकार की जानकारियाँ हमें गुरुकुल प्रेमियों से प्राप्त होती रहती हैं। आपका यह गुरुकुल आपके तन-मन व धन के सहयोग से निरन्तर प्रगति पर अग्रसर है। आपके सर्वात्मा सहयोग के लिए हम आपके हृदय से आभारी हैं। इसके लिए हम कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आप सभी गुरुकुल प्रेमियों, जिन्होंने वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होकर हमारा उत्साह बढ़ाया, धन्यवाद करते हैं। हम अपने उन बन्धुओं के भी समान रूप से आभारी एवं कृतज्ञ हैं जो किसी कारण भौतिक रूप से उत्सव में सम्मिलित नहीं हो सके परन्तु जिनकी भावनायें व प्रेरणायें इस गुरुकुल की उन्नति से जुड़ी हुई हैं। आप सभी के मनसा, वाचा, कर्मणा सहयोग के लिए भी हम आपका भूरिशः हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

एक बार हम पुनः समस्त गुरुकुल प्रेमियों व सहयोगियों का हृदय से आभार व धन्यवाद करते हैं और आशा करते हैं कि आपका प्रेम व सहयोग गुरुकुल के प्रति भविष्य में भी बना रहेगा जिससे यह गुरुकुल धर्म व संस्कृति की रक्षा सहित वेद प्रचार के क्षेत्र में आपके सहयोग व भागीदारी से अपना योगदान कर सके। गुरुकुल प्रेमी सभी विद्वानों, नेताओं व भजनोपदेशकों का भी हार्दिक धन्यवाद है।

-श्री मनमोहन कुमार आर्य
अतिथि सम्पादक

Youtube पर घर बैठे सम्पूर्ण कार्यक्रम देख सकते हैं

श्रीमद्दयानन्द-आर्षज्योतिर्मठ-गुरुकुल पौन्धा देहरादून के वार्षिकोत्सव के सम्पूर्ण कार्यक्रम को अब आप अपने घर पर परिवार के साथ बैठ कर Youtube पर सीधे देख सकते हैं। Youtube पर जा कर Gurukul Poundha लिखकर Search करने पर सम्पूर्ण कार्यक्रम HD Quality की Videos देख सकते हैं। गुरुकुल पौन्धा के Facebook पेज पर भी आप देख सकते हैं।

गुरूकुल पौन्धा देहरादून का १७ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

(३ से ५ जून २०१६ तक के सम्पूर्ण कार्यक्रम का विवरण)

❑ प्रस्तुतकर्ता- श्री मनमोहन आर्य......

प्रथम दिवस का वृत्तान्त

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल, पौंधा देहरादून का तीन दिवसीय सत्रहवां वार्षिकोत्सव शुक्रवार ३ जून, २०१६ को आरम्भ हुआ। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ हुआ जिसकी पूर्णाहुति रविवार ५ जून, २०१६ को हुई। यज्ञ में मंत्र पाठ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने किया। न केवल यजमानों ने ही अपितु बड़ी संख्या में दूर दूर से पधारे गुरुकुल प्रेमी श्रद्धालुओं ने भी यज्ञ में आहुतियाँ दी।

प्रथम दिवस प्रातः काल डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण महायज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उनकी सहायता के लिए यज्ञ के अध्यक्ष आचार्य यज्ञवीर भी उनके साथ विराजमान रहते थे। यज्ञ के अनन्तर प्रवचन करते हुए कहा डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि परमात्मा ही सबको सौम्यगुणों से युक्त करता है। सौम्य का अर्थ उन्होंने शीतलता व शान्ति बताया जो हमें ईश्वर से प्राप्त होती है। उन्होंने कहा कि आनन्द रस की प्राप्ति के लिए ही जीवात्मा प्रयत्न करता है। परमात्मा की शरण में पहुंचना ही मोक्ष है। उन्होंने कहा कि परमात्मा कण-कण में व्याप्त होता हुआ सबको आनन्द रस से आप्लावित करता है। हमारा जीवन यज्ञमय हो। हम सदा माता पिता आदि देवताओं का सम्मान करें, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें और उनकी आज्ञाओं का पालन करें। उन्होंने कहा कि यज्ञ में डॉला गया सुगन्धित व पुष्टिकारक पदार्थ प्रभाव में हजारों गुणा बढ़ जाता है और सबको लाभ पहुंचाता है। यज्ञ के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि परिवार के साथ मिलकर रहने का स्वभाव बनायें। हमारे व्यवहार में परिवार व समाज के साथ संगतिकरण करने की भावना हो। धर्मकार्यों में खुले हाथों से दान दें। बिना दान दिये अच्छा काम भी पूरा नहीं होता। यज्ञ के ब्रह्मा ने अन्त में सबको आशीर्वाद दिया और मंगलकामना की। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी के पश्चात् गुरुकुल के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने कहा कि हम सन् २००० में यहाँ आये थे। तब यहाँ गुरुकुल की स्थापना हुई थी। हमारा उद्देश्य गुरुकुल के माध्यम से आर्ष ग्रन्थों व साहित्य का अध्यापन व इसके द्वारा आर्ष शिक्षा पद्धति का संरक्षण व विस्तार है। इसी उद्देश्य से स्वामी प्रणवानन्द जी के नेतृत्व में गुरुकुल की स्थापना हुई थी। विगत १६ वर्ष की यात्रा में गुरुकुल ने सफलताओं के नये नये आयाम जोड़े हैं। गुरुकुल के फल अब समाज को उपलब्ध हो रहे हैं। इसके बाद **''ओ३म् ध्वज''** का आरोहण किया गया। गुरुकुल में बाहर से आये व स्थानीय सभी व्यक्ति, विद्वान् व संन्यासी गुरुकुल के प्रांगण में एकत्रित हुए और ध्वजारोहण किया। सबने मिलकर वैदिक राष्ट्रिय प्रार्थना सहित ध्वज गीत गाया। ध्वजारोहण में सम्मिलित विद्वानों में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी सहित भजनोपदेशक पं. ओम् प्रकाश वर्मा, पं. सत्यपाल पथिक, स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ. रघुवीर वेदालंकार एवं पं. धर्मपाल शास्त्री आदि प्रमुख विद्वान् एवं बड़ी संख्या में ऋषि भक्त थे।

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी ने इस अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि ईश्वर हमारे लिए परम हितकारी सदा से हैं। ईश्वर से हमें अनादिकाल से सब कुछ मिलता आ रहा है। संसार व प्राणी मात्र का एक ही रचयिता परमेश्वर हैं। मनुष्य शरीर के सभी अंगों का उल्लेख कर स्वामी जी ने कहा कि इनका रचयिता व पोषक परमात्मा ही है। स्वामी जी ने कहा कि जब हम सो रहे होते हैं तो हमारे प्राणों को परमात्मा ही चलाता है। उन्होंने कहा कि भूमि भगवान की है तथा इस पर जल, वायु, अग्नि, आकाश, अन्न, दुग्ध आदि सभी पदार्थ परमात्मा के बनाये हुए हैं। उसी की कृपा से हमारा शरीर व जीवन चल रहा है। भगवान् ने हमें ज्ञान-इन्द्रियाँ व कर्मेन्द्रियाँ दी हैं जिससे हम सुख पाते हैं। ईश्वर की कृपा

से हमें मनुष्य योनि मिली है। हम चिन्तन कर सकते हैं। मनुष्य जीवन अपने आप को जानने के लिए है। हमें आवागमन से छूटने का अवसर मिला है। हमारी जीवन यात्रा पूर्व जन्मों से भी पूर्व कभी मोक्ष अवधि के समाप्त होने पर आरम्भ हुई है। हमें परमात्मा को जानना है तथा विवेक व ज्ञानपूर्वक जीवन को जीना है। हमें यह ध्यान रखना है कि हम शरीर नहीं अपितु जीवात्मा हैं। शरीर पैदा होता और नष्ट होता है परन्तु आत्मा न पैदा होती है और न नष्ट ही होती है। हमें जीवन को पवित्रता से जीना है। जीवन के एक एक क्षण का उपयोग करना है। परमात्मा हमारा निकटतम है। जीवात्मा और ईश्वर का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध है। उसे जानने व अनुभव का हमें प्रयास करना है।

इसके बाद यजमानों एवं अन्य बन्धुओं ने प्रातराश किया और कुछ समय विश्राम किया। अगला सत्र '**सत्यार्थ सम्मेलन**' था जो पूर्वान्ह ९:३० बजे आरम्भ हुआ। इसके संयोजक श्री अजीत आर्य और अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। सत्र के आरम्भ में गुरुकुल के ब्रह्मचारी सौरभ ने तीन भजन प्रस्तुत किये। पं. इन्द्रजित् देव जी को सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के नामों के सन्दर्भ में अपने विचार प्रस्तुत करने का निवेदन किया गया। पं. इन्द्रजित् देव जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पं. विष्णु लाल पण्डया परोपकारिणी सभा, अजमेर के मंत्री थे। **उनके प्रश्न करने पर महर्षि दयानन्द ने अपने उत्तर में उन्हें कहा था कि एक भाषा, एक ग्रन्थ, एक उपास्य देव, तथा एक सुख-दुःख जब तक नहीं होगा तब तक मनुष्यों में परस्पर एकता स्थापित नहीं हो सकती।** विद्वान् वक्ता ने '**एकं सदविप्रा बहुधा वदन्ति**' का उल्लेख कर कहा कि ईश्वर एक है परन्तु लोग उसका वर्णन अनेक प्रकार से करते हैं। उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर के १०८ नामों का उल्लेख है। ईश्वर के यह नाम उसके निज नाम '**ओ३म्**' से इतर हैं और यह सब ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव सहित जीवात्मा से संबंधों के सूचक हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वेदों के शब्द रूढ़ नहीं अपितु यौगिक हैं। विद्वान् वक्ता ने कहा कि यौगिक शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं। श्री इन्द्रजित् देव ने गीता का उल्लेख कर अर्जुन के अनेक नामों गुडॉकेश, कौन्तेय, आजानुबाहु आदि की चर्चा की और कहा कि अर्जुन के घुंघरालु बालों के कारण कृष्ण जी ने उसे गुडॉकेश नाम से सम्बोधित किया था। उन्होंने श्रोताओं को बताया कि कि गीता में श्रीकृष्ण जी के भी अनेक नामों का उल्लेख हुआ है जिनमें वार्ष्णेय तथा माधव आदि कई नाम हैं। एक ही मनुष्य के अनेक नाम उसके गुणों व संबंधों के अनुसार होते हैं। एक मनुष्य को उसकी पत्नी, पतिदेव, माता-पिता, पुत्र, बच्चे, पिता व अन्य संबंधी भाई, चाचा, ताऊ, मामा, मौसा, फूफा, दादा, पौत्र आदि अनेक नामों से पुकराते हैं। **विद्वान् वक्ता ने प्रश्न किया कि जब सांसारिक लोगों के इतने नाम व सम्बोधन हो सकते हैं तो वेदों में एक ईश्वर के लिए अनन्त गुण व अनेक सम्बन्धों के कारण अनेक नाम क्यों नहीं हो सकते?** उन्होंने कहा कि ईश्वर में अनन्त गुण होने के कारण उसके गुणवाचक नाम सहस्रों व उससे भी अधिक हो सकते हैं। **श्री इन्द्रजित् जी ने पौराणिकों की बुद्धि पर आश्चर्य व्यक्त कर कहा कि वह वेदों में आये ईश्वर के अनेक नामों को स्वीकार न कर उन उन नामों से अनेक ईश्वरों का होना स्वीकार करते हैं। पौराणिकों के इस व्यवहार पर उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया।** उन्होंने कहा कि ईश्वर का निज नाम ओ३म् है।

श्री इन्द्रजित् देव ने पौराणिकों द्वारा विवाह में नवग्रहों की पूजा का उल्लेख किया और कहा कि इन नव ग्रहों में एक देव गणेश होते हैं। कहा जाता है कि बिना गणेश की पूजा के विवाह सम्पन्न नही हो सकता। इस पर विद्वान् वक्ता ने प्रश्न किया कि गणेश जी के पिता शिव व शिव के अन्य अनेक पूर्वजों सहित गणेश जी के जन्म के पूर्व के लोगों का विवाह बिना गणेश पूजा के कैसे सम्पन्न हुआ था? गणेश शब्द का अर्थ बताते हुए उन्होंने कहा कि गणेश व्यक्ति वाचक शब्द नहीं अपितु यह शब्द गण+ईश है अर्थात् जनता के समूह का स्वामी अर्थात् परमेश्वर है। पौराणिकों द्वारा इस शब्द का रूढ़िवादी अर्थ करना अनुचित व भ्रामक है। आर्यसमाज के विद्वान् आचार्य इन्द्रजित् देव जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के १०८ नामों का उल्लेख कर उनका अर्थ बताया है। इसका प्रयोजन है कि यह सब नाम एक ही

ईश्वर के उसके भिन्न भिन्न गुणों व सम्बन्धों के कारण से हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर एक है जो सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ आदि गुणों वाला है। केवल वही ईश्वर सभी मनुष्यों का उपास्य देव है। यह कह कर विद्वान् वक्ता ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

सम्मेलन के संयोजक श्री अजीत कुमार ने दूसरे प्रवचन के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी को आमंत्रित किया। उन्हें **'ईश्वर का सत्य स्वरूप'** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने का निवेदन किया गया। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपना व्याख्यान आरम्भ करते हुए कहा कि यहाँ बैठे हुए हम सब व्यक्ति एक ही विचार को मानते हैं जिसे वैदिक विचार कहते हैं। परमात्मा के सत्यस्वरुप का दर्शन कराने के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना महर्षि दयानन्द ने की है। सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द ने ईश्वर के अनेक नामों से हमारा परिचय कराया है। पृथिवी, जल, वायु आदि अनेक पदार्थों को भी ऋषि ने संस्कृत व्याकरण के आधार पर परमात्मा के नाम सिद्ध किया है। **उन्होंने कहा कि लोगों ने अलग-अलग नामों से अलग-अलग ईश्वर की कल्पना कर ली।** आज भी लोग अनेक ईश्वर को मानते हैं। **ऋषि दयानन्द ने महाभारत के बाद वेदों के आधार पर एक ईश्वर का सिद्धान्त दिया।** पौराणिक लोगों ने ईश्वर के अवतार की कल्पना कर समाज में अनेक भ्रान्तियाँ फैलाई हैं। उन्होंने कहा कि ईश्वर के अवतार का विचार वेद और महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। अवतारवाद के आधार पर प्रतिमा की पूजा समाज में चल पड़ी। वैदिक दर्शन के अनुसार परमात्मा की प्रतिमा न होने से प्रतिमा पूजन करना अनुचित है। स्वामी जी ने कहा कि यजुर्वेद प्रतिमा पूजन का खण्डन करता है। **वेद कहता है कि वह परमात्मा महान् यशवाला है।** उसी परमात्मा की उपासना का विधान वेद करते हैं। स्वामीजी ने कहा कि जो मनुष्य ईश्वर के यथार्थ स्वरूप से भिन्न अन्य किसी की उपासना करता है वह दु:खसागर में डूबा रहता है। आर्यसमाज के दूसरे नियम पर विचार करने से ईश्वर विषयक भ्रान्तियों का निराकरण हो सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि ईश्वर निर्दोष एवं निर्विकार है। सारा ब्रह्माण्ड परमात्मा के गर्भ में है। आलोचनाओं का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि उदर में मल-मूत्र होने पर भी मनुष्य को दुर्गन्ध नहीं आती। इसी प्रकार से समस्त संसार परमात्मा के गर्भ में होने के कारण परमात्मा को मल मूत्र की दुर्गन्ध नहीं आती। ईश्वर जगत् में व्यापक है, इसीलिए परमात्मा का नाम विष्णु है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि मूर्ति पूजा जैन मत से चली है। जैनियों ने यह मूर्तिपूजा वाममार्गियों से ली है। परमात्मा कण-कण में व्यापक है। परमात्मा अग्नि व आकाश सहित संसार के सभी पदार्थो में व्यापक है। प्रश्न हो सकता है कि यह सभी एक साथ कैसे रहते हैं? स्वामी जी ने कहा कि पत्थर जल, अग्नि, पृथिवी व आकाश से मिलकर बना है। यह सभी पत्थर में रहते हैं। उन्होंने कहा कि जो सूक्ष्म होता है वह अपने से कुछ स्थूल में प्रवेश कर सकता है। ईश्वर सर्वातिसूक्ष्म होने से सब पदार्थों के अन्दर रह सकता है। ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है। गीता से भी इसकी पुष्टि होती है। **'ईश्वर सर्वभूतानां हृद्देशेषु अर्जुन तिष्ठति।'** स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा सच्चिदानन्द स्वरूप है। उपनिषदें कहती हैं कि परमात्मा एक है। योगदर्शन के अनुसार क्लेश, कर्म व कर्म के फलों से रहित पुरुष विशेष ईश्वर है। ऐसे परमात्मा की हम सबको स्तुति करनी चाहिये। **गुणवान् में गुण और दोष में दोष देखना स्तुति कहलाती है।** परमात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार स्वयं को बनाना व वेदाज्ञा का पालन करना ईश्वर की स्तुति है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि हम सबको परमात्मा से प्रेम करना चाहिये। परमात्मा हमारे मित्र हैं। परमात्मा प्रकाशस्वरूप और ज्ञान स्वरुप हैं। उसकी स्तुति करने से हमारे जीवन से अन्धकार दूर होकर सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। स्वामी जी ने कहा कि परमात्मा का एक नाम अतिथि भी है। इस नाम से यह ज्ञात होता है कि ईश्वर को समय सीमा में नहीं बांधा जा सकता। इसी के साथ स्वामी जी ने अपने प्रवचन को विराम दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद आर्य भजनीक श्री मामचन्द पथिक जी ने एक भजन प्रस्तुत किया जिसके कुछ बोल थे **'सूर्य की लाली में और चन्द्र की उजियाली में बोलो वो कौन है, बोलो वो कौन है? जो हरियाली में, वृक्षों की डॉली डॉली में है, बोलो वो कौन**

है, बोलो वो कौन है?' इस भजन को श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। इसके बाद प्रसिद्ध आर्य विद्वान् डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने अपने सम्बोधन में कहा कि सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास का अर्थ है कि हम राजा बने या बनायें। उन्होंने श्रोताओं से पूछा कि क्या हममें से किसी का संकल्प है कि हम वहाँ तक पहुंचे? विद्वान् वक्ता ने पूछा कि भारत का सुधार कैसे होगा? जब तक आप राजा बनने का संकल्प नहीं करते सत्यार्थ प्रकाश का छठां समुल्लास पढ़ने से आपको कोई लाभ नहीं होगा। हमारी राजनीति में दिलचस्पी न होने और हमारा कोई राजनैतिक संगठन न होने का परिणाम यह हुआ है कि हमारा देश व समाज बिगड़ गया है। उन्होंने कहा कि आप लोगों में न राजा बनने की चाहत है और न शक्ति है तो आप छठे समुल्लास को पढ़कर क्या करोगें? डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि आप में राजनीति में जाने की भावना व इच्छा होनी चाहिये। हमारे आर्यसमाज के नेताओं का देश की राजनीति से दूर रहने का निर्णय गलत था। अब भी हमें राजनीति में जाने व रहने का निर्णय करना चाहिये। इस क्रम में डॉ. रघुवीर जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में विहित तीन सभाओं की चर्चा कर उनके स्वरूप पर प्रकाश डॉला। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश में आज के जनतन्त्र जैसा स्वरुप नहीं है। इसने देश को डूबा दिया है। इसने आर्यसमाज को भी डूबा दिया है। आज का जनतन्त्र बाहुबलियों के हाथों में बंधा हुआ है। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द ने राजार्य, धर्मार्य तथा विद्यार्य सभा की चर्चा की है। धर्मार्य सभा मुख्यत: न्याय का विभाग है। विद्यार्य सभा एक प्रकार से शिक्षा मंत्रालय जैसा है। सैन्य विभाग राजार्य सभा के अन्तर्गत है। डॉ. रघुवीर वेदांलकार जी ने ऋषि दयानन्द के शब्दों **'एक को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार न देना चाहिये'** शब्दों की भी चर्चा की। प्राचीन परम्परा के अनुसार राजा प्रजा के अधीन रहे हैं। **उन्होंने कहा कि देश में प्राचीन काल से राजतन्त्रीय व्यवस्था रही है न कि प्रजातंत्रीय व्यवस्था।**

विद्वान् वक्ता ने कहा कि यदि नेता अच्छा काम न करे तो प्रजा को अपने निर्वाचित नेता को बुलाने का अधिकार होना चाहिये। उन्होंने कहा कि यह तथ्य भी सामने आया है कि हमारे एक पूर्व प्रधानमंत्री स्वतन्त्र रूप से निर्णय नहीं करते थे। यह बात समाचारों में आ चुकी है। ऋषि दयानन्द और छठे समुल्लास के अनुसार यदि राजा प्रजा के अधीन न हो तो वह प्रजा को खाये जाता है। अत: राजा को स्वाधीन न होना चाहिये। आर्य विद्वान डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि पक्षपात रहित व पूर्ण विद्यायुक्त योग्य व्यक्ति को ही राजा मानें। धर्मार्य सभा, विद्यार्य सभा तथा राजार्य सभा के अधिकारियों की चर्चा कर आपने कहा कि यह महाविद्वान् होने चाहिये। आचार्य जी ने यह भी कहा कि स्वतन्त्रता के बाद इतिहास कम्युनिस्टों के हाथ में रहा और शिक्षा मंत्रालय मुसलमानों के हाथ में रहा। इस अवधि में इतिहास में गड़बड़ी की गई और वेदों की घोर उपेक्षा हुई। उन्होंने कहा कि राजा का उत्तम विद्वान् व धार्मिक होना आवश्यक है तभी वह सबके प्रति पक्षपातरहित न्याय कर सकता है। राजा व राज्याधिकारियों का चरित्र भी शुद्ध, पवित्र व उत्तम होना चाहिये। उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि बाहुबली जेल में रहकर भी लोगों की हत्यायें करा देते हैं। सारी राज व्यवस्था बिगड़ी हुई है। हमें संकल्प लेना चाहिये कि हमें राज व्यवस्था में घुसना है। हमारा उद्देश्य होना चाहिये कि हम राजनीति को शुद्ध करेंगे। आचार्य जी ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में दण्ड व्यवस्था से सम्बन्धित नियमों को पढ़कर उन पर प्रकाश डॉला। आचार्य जी ने गोमांस खाने वाले और इसकी घोषणा करने वाले एक न्यायाधीश का उल्लेख किया और इस पर गहरा दु:ख जताया। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति में विधान है कि जितने आततायी अर्थात् आतंकवादी हैं उनका एनकाउण्टर कर देना चाहिये जिससे निरपराध व शान्त प्रकृति के लोग समाज में भय से रहित और सुखपूर्वक रह सके। आचार्य जी ने कांग्रेस के नेता दिग्विजय सिंह के बयानों की भी आलोचना की।

इसके बाद डॉ. सोमदेव शास्त्री ने अपने सम्बोधन में आर्यसमाज के द्वारा राजनीति में भाग न लेने के निर्णय को गलत बताया। उन्होंने कहा कि एक बार आर्यसमाजी नेता और दैनिक प्रताप समाचार पत्र के सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी लन्दन की पब्लिक लाइब्रेरी में गये। उन्होंने वहां के मुख्य अधिकारी से पूछा कि **क्या आपके पास सत्यार्थ प्रकाश**

पुस्तक है? पुस्तक उनके सामने प्रस्तुत कर दी गई। वीरेन्द्र जी ने पूछा की इस पुस्तक के बारे में आपकी व आपके देशवासियों की क्या सम्मति है? उसने उत्तर दिया कि जब से यह सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक प्रकाशित हुई है तब से भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह की भावना में वृद्धि हुई है। देश की स्वतन्त्रता व राजनीति में इस ग्रन्थ का महत्वूपर्ण योगदान रहा है। डॉ. सोमदेव शास्त्री ने आगरा के ऋषि भक्त पं. भोजदत्त आर्यमुसाफिर के उपदेशक विद्यालय की चर्चा कर बताया कि यहां ठाकुर अमर सिंह, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर, पं. महेश चन्द्र आलिम फाजिल तथा राहुल सांस्कृत्यायन जैसे लोग विद्यार्थी के रूप में पढ़े। इस विद्यालय की कीर्ति व यहां के स्नातकों के कार्यों से चिढ़कर बनारस का एक मौलवी पं. भोजदत्त जी की हत्या करने आगरा आता है। इस मौलवी गुलाम हैदर के विद्यालय पहुंचने पर पं. भोजदत्त जी दरवाजा खोलते हैं और मौलवी से पूछते हैं कि वह उनकी क्या सेवा कर सकते हैं? मौलवी ने सफेद कपड़े पहने हुए थे, उनके सिर व दाढ़ी के बाल भी सफेद थे और प्रभावशाली व्यक्तित्व था। उन्होंने पंडित जी से सत्यार्थप्रकाश की चर्चा करने का अपना आशय प्रकट किया। पंडित भोजदत्त जी ने उनका आतिथ्य किया और कहा कि आप विश्राम कर अपनी थकान उतार लें, फिर चर्चा करेंगे। मौलवी जी ने कुरआन पर चर्चा की और प्रश्न किये, पंडित जी उनके प्रश्नों का समाधान करते रहे। १ घंटा व्यतीत हुआ, दो घंटे व्यतीत हुए फिर ३ घंटे व्यतीत हो गये और करते करते मौलवी जी के सभी प्रश्न हो गये जिनका पं. भोजदत्त जी ने समाधान कर दिया। मौलवी साहब उपदेशक विद्यालय आगरा में पांच-सात दिन रहे। विद्वान् वक्ता ने बताया की कुरआन में छः हजार से अधिक आयतें हैं। जितने दिन मौलवी साहब विद्यालय में रहे, पंडित भोजदत्त जी एक-एक आयत की समीक्षा कर उन्हें समझाते रहे। शंकायें दूर होने के बाद मौलवी साहब ने अपना बक्सा खोला। उसमें से एक छूरा निकाला। **मौलवी साहब ने वह छूरा पंडित जी को दिखाकर कहा कि मैं आपकी हत्या करने आया था परन्तु आपने बिना किसी छूरे के ही मेरी हत्या कर दी। अब मैं बनारस जाना नहीं चाहता। मौलवी साहब ने आग्रह पूर्वक वैदिक धर्म स्वीकार किया। शुद्ध होकर उन्होंने सत्य देव आर्य मुसाफिर नाम ग्रहण किया और आजीवन वेदों का प्रचार किया। आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने कहा कि यह सत्यार्थप्रकाश का प्रभाव था।** सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय की चर्चा कर डॉ. सोमदेव जी ने स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी का उल्लेख किया और बताया कि वह वेदान्ती साधु थे। उन्होंने कहा कि स्वामी जी एक बार बीमार हो गये तो एक आर्यसमाजी ने बड़ी लगन से उनकी सेवा करने सहित उनका उपचार कराया जिससे कुछ दिनों में स्वामी जी स्वस्थ हो गये। जब वह वहाँ से लौटने लगे तो आर्यसमाजी सेवक ने रेशमी कपड़े में लपेट कर उन्हें एक पुस्तक भेंट की और निवेदन किया कि वह एक बार उस पुस्तक को अवश्य पढ़े। स्वामीजी ने अवकाश मिलने पर जब वस्त्र को खोलकर पुस्तक निकाली तो वह सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक निकली जिसे देख कर उन्हें क्रोध आ गया और पुस्तक को दूर फेंक दिया। कुछ देर में उनका क्रोध शान्त हुआ तो उन्हें उस सेवक की सेवा याद आई जिसने बिना किसी स्वार्थ के उनकी जी जान से सेवा की थी। उन्होंने सोचा कि पुस्तक पढ़ने में नुकसान ही क्या है? अतः उन्हें लगा कि उस भक्त व सेवक का अनुरोध पूरा करना चाहिये। उनके मन में यह विचार भी आया कि पुस्तक पढ़ने से हानि तो कुछ नहीं होगी अपितु इसकी कमिया पता चलने से लाभ ही होगा। अपने भक्त की श्रद्धा को स्मरण कर आपने पूरा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ डॉला। स्वामी सर्वदानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश को ऐसा पढ़ा कि सदा के लिए दयानन्द व सत्यार्थ प्रकाश के होकर रह गये। उन्होंने साधु आश्रम अलीगढ़ की स्थापना की और आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा। आचार्यजी ने स्वामी सर्वदानन्द जी के ग्रन्थ **'सन्मार्ग दर्शन'** की चर्चा की और कहा कि यह स्वाध्याय का एक उत्तम ग्रन्थ है। डॉ. सोमदेव शास्त्री ने ऋषि भक्त पं. गुरुदत्त विद्यार्थी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को १८ बार पढ़ने का उल्लेख कर उनकी सम्मति से भी श्रोताओं को अवगत कराया। **आपने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने से आप अन्धविश्वासों और पाखण्डों से बचेंगे।** विद्वान् वक्ता ने कहा कि कुछ सामयिक विषयों के ग्रन्थ होते है और कुछ

ऐसे होते हैं जो मनुष्यों की दीर्घकालिक व जन्म-जन्मान्तरों की समस्याओं का समाधान करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश ऐसा ही ग्रन्थ है। उन्होंने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश सभी विषयों, शंकाओं और प्रश्नों का समाधान करता है।

विद्वान् वक्ता ने फलित ज्योतिष रूपी पाखण्ड की भी चर्चा की। ऋषि दयानन्द जी का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि ग्रह व उपग्रह किसी मनुष्य को सुख व दु:ख नहीं दे सकते। सुख व दु:ख हमें परमात्मा द्वारा अपने कर्मों के अनुसार मिलते हैं। विद्वान् वक्ता ने कहा कि सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर गति करते हैं। फलित ज्योतिष के ग्रन्थों का उल्लेख कर उन्होंने बताया कि इनके अनुसार यदि कोई बच्चा मूल नक्षत्र में पैदा हो जाये तो फलित ज्योतिष ग्रन्थों की मान्यता है कि उसका मुंह देखने से उसका पिता मर जायेगा। इस लिए ऐसे बच्चे को व पिता को दूर रखने का विधान किया गया जिससे वह एक दूसरे का मुंह न देख सकें। आचार्यजी ने बताया कि रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी भी मूल नक्षत्र में जन्में थे। फलित ज्योतिष के इन मिथ्या विचारों के कारण इन पिता व पुत्र को आठ वर्ष के लिए एक दूसरे से पृथक कर दिया गया था। इस अवधि में गोस्वामी तुलसीदास जी अपने एक रिश्तेदार के घर रहे। **८ साल बाद पिता ने अपने पुत्र का और पुत्र ने अपने पिता का मुख देखा।** तुलसीदास जी ने इस पाखण्ड और अन्धविश्वास की पीड़ा को अपने ग्रन्थ **कवितावली** में प्रकट किया है। उन्होंने लिखा है कि मेरा जन्म दुर्भाग्य से युक्त रहा। मेरे जन्म पर घर में खुशी के गीत नहीं गाये गये। मिठाईयां नहीं बांटी गई। मुझे घर से निकाल कर फेंक दिया गया। यह सब फलित ज्योतिष के कारण हुआ। **डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश हमें पाखण्डों से बचाता है।** आपने ग्रहों के प्रभाव सहित पाखण्डों व अन्धविश्वासों की विस्तार से चर्चा की और कहा कि बिना दयानन्द जी के हमारा गुजारा नहीं है। फलित ज्योतिष वर्णित काल-सर्पयोग के प्रभाव व इसके निवारण हेतु नींबू और मिर्च के प्रयोग की उन्होंने चर्चा कर इसे मिथ्या व पाखण्ड बताया और कहा कि आज भी देश में अनेक पाखण्ड और अन्धविश्वास विद्यमान हैं। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए आचार्य डॉ. सोमदेव जी ने कहा कि सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ का स्वाध्याय श्रद्धा से करें जिससे हम पाखण्ड से दूर रहकर अच्छा जीवन व्यतीत कर सकेंगे। डॉ. सोमदेव शास्त्री के प्रवचन के पश्चात् डॉ. धनंजय आर्य ने कहा कि यदि हम सत्यार्थ प्रकाश पढ़ेंगे तो हमारा जीवन प्रकाशमय हो जायेगा। उन्होंने कहा कि पापाचार का कारण ईश्वर के प्रति समुचित जानकारी न होना और वैदिक धर्म व इसके सिद्धान्तो से अनभिज्ञ होना है। श्रोताओं से उन्होंने प्रश्न किया कि आप स्वयं विचार करें कि क्या आप संसार को आर्य बनाने का प्रयास कर रहे हैं जबकि अन्य मतावलम्बी अपने-अपने मत का प्रचार कर वृद्धि को प्राप्त रहे हैं। आचार्य जी ने अपने कर्तव्य को जानकर उसका निर्वाह करने की सलाह दी। आचार्य धनंजय ने धर्म को जानने और उसका पालन करने का भी आह्वान किया। इसके साथ ही वार्षिकोत्सव के प्रथम दिन का प्रथम प्रात:कालीन सत्र का समापन हुआ।

उत्सव के प्रथम दिवस के अपरान्ह के सत्र में ३:३० बजे से सामवेद पारायण यज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ जिसमें मन्त्रपाठ गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारियों ने किया। उन्होंने यज्ञ के मध्य में यह भी कहा कि शरीर में विद्यमान जीवात्मा को पुरुष कहा जाता है और ब्रह्माण्ड में व्यापक परमात्मा को भी पुरुष कहा जाता है। यज्ञ में ब्रह्माजी को सहयोग कर रहे गुरुकुल के आचार्य डॉ. यज्ञवीर ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्य ऐसे ब्रह्मचारी की कामना नहीं करते जो आलसी प्रकृति का हो और निद्रालु हो। आचार्यजन विद्वतजनों को ही पढ़ाने को जाते हैं। आचार्य चाहते हैं कि उन्हें आलस्यरहित, मेधावी व ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले विद्यार्थी ही प्राप्त हों। यज्ञ के बाद गुरुकुल के आचार्य श्री धनंजय जी ने वेद-वेदांग सम्मेलन आरम्भ होने की सूचना दी और अध्यक्षता के लिए **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी** का नाम प्रस्तावित किया जिसका सभी ने करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। सम्मेलन के आरम्भ में आर्यजगत के शिरोमणि भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक जी ने अपना एक प्रसिद्ध गीत गाकर प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **'ज्ञान का सागर चार वेद ये वाणी है भगवान की। इसी से मिलती सब सामग्री जीवन के कल्याण की।।'** कुछ अन्य पंक्तियां थी **'सब सच्ची विद्यायें जग में प्रकट वेद से**

होती हैं। यहीं से जाकर सब नदियां पृथिवी का आंगन धोती हैं। तथा सृष्टि एक अदालत है और न्यायाधीश विधाता है। यहीं पर ही हर प्राणी अपने कर्मों का फल पाता है।।' आदि। पथिक जी ने यह भजन पूरे योगनिष्ठ होकर प्रस्तुत किया जिसे लोगों ने पसन्द किया और पुरस्कार स्वरूप उन्हें धनराशियां भेंट की। इसके बाद पथिक जी ने दूसरा भजन प्रस्तुत करने से पूर्व कहा कि यह उनका रचा हुआ उनको सबसे प्रिय भजन है। इस भजन के शब्द थे **'प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो। प्रभु तुम गगन से भी विशाल हो। मैं मिसाल दूं तुम्हें कौन सी दुनिया में तुम बेमिसाल हो। प्रभु तुम अणु से भी सूक्ष्म हो।।'**

वेद वेदांग सम्मेलन का प्रथम सम्बोधन गुरुकुल के पूर्व ब्रह्मचारी प्रो. अजीत कुमार शास्त्री का हुआ। श्री अजीत कुमार शास्त्री ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में श्रोताओं से प्रश्न किया कि अच्छे विचार सुनकर हमारे व आपके जीवन में परिवर्तन क्यों नहीं होता? उन्होंने कहा कि आपने अपने घर पर सोचा कि हम पौंधा के गुरुकुल में जायें। परिणाम सामने है कि आप यहाँ बैठे हुए हैं। उन्होंने पूछा कि क्या आपने वेद या अपने आप को जानने का प्रयत्न किया है? उन्होंने कहा कि क्या कारण है कि हमारा सुना व पढ़ा हुआ हमारे जीवन में उतर नहीं पाता। हम जो उपदेश व प्रवचन आदि सुनते हैं वह हमारे जीवन से जुडता नहीं है? विद्वान् वक्ता ने कहा कि जब तक हम सुनी हुई अच्छी बातों को अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनायेंगे तब तक सुनने का कोई लाभ होने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि वेदों की यह मान्यता है कि हमारे जीवन का कोई सार्थक एवं महत्वपूर्ण लक्ष्य है। उन्होंने श्रोताओं से पूछा कि क्या हमने कभी यह विचार किया है कि हमारे जीवन का साध्य क्या है? सूक्ष्म शरीर और संस्कार मनुष्य की पूर्व जन्म में मृत्यु होने पर साथ आते हैं और इस जन्म में मृत्यु होने पर साथ जायेंगे।

श्री अजीत आर्य ने कहा कि हम संसार में न धन, न यश और न परिवार बढ़ाने आये हैं। हमारे जीवन का लक्ष्य मुक्ति वा मोक्ष है जिसके लिए हमें प्रयत्न करना है। ब्रह्मचारी अजीत कुमार ने कहा कि हमें हमारा शरीर ईश्वर से मिला है जो एक गाड़ी के समान है जिसके द्वारा हमें मोक्ष धाम पर पहुंचना है। उन्होंने कहा कि जब हमें अपने जीवन का लक्ष्य मोक्ष है, समझ में आ जायेगा तब हम इसके लिए प्रयत्न करेंगे। इसी क्रम में श्री अजीत जी ने यजुर्वेद के प्रसिद्ध मन्त्र **'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।'** का उच्चारण किया। उन्होंने बताया कि इस मन्त्र में कहा गया है कि मैं ब्रह्म को जानता हूं। उसे जानकर मनुष्य मृत्यु से पार जा सकता है। श्री अजीतकुमार आर्य ने कहा कि हमें अपने आत्म तत्व अर्थात् अपने आप को जानना है। इसे जानने का मार्ग हमें वेद बताता है। उन्होंने कहा कि आप अपने लक्ष्य को जानने के लिए तैयार हो जाइये। अपने जीवन के लक्ष्य को जानिये और उसे प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिये। इसी के साथ आर्य विद्वान् अजीत कुमार ने अपनी वाणी को विराम दिया।

श्री अजीत कुमार के बाद अपने व्याख्यान में सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व वागमार्गी वेदों को गड़रियों के गीत बताते थे। समाज में बाल विवाह व अनेक कुरीतियाँ प्रचलित थी। इन कुरीतियों के बारे में जब लोगों से पूछा जाता था तो वह कहते थे कि ऐसा करना वेदों में लिखा है। यदि कोई विवाहित बालिका विधवा हो जाती थी तो समाज द्वारा उसे सती होने के लिए विवश किया जाता था। हमारे पौराणिक विद्वान कहा करते थे कि गोमेघ, अजामेघ, अश्वमेघ व नरमेघ यज्ञों की आज्ञा वेदों में है। महात्मा बुद्ध ने जब यज्ञों में की जाने वाली हिंसा से व्यथित होकर याज्ञिकों से प्रश्न किये तो उन्हें उत्तर मिला कि ऐसे यज्ञों को करने का वेदों में विधान है। यह सुनकर महात्मा बुद्ध बोले कि मैं ऐसे वेदों को, जिनमें पशु हिंसा की आज्ञा हो, नहीं मानता। विद्वान वक्ता ने महात्मा बुद्ध जी के अजातशत्रु के पास जाने व उनसे वार्तालाप की कथा सुनाई। महात्मा बुद्ध ने अजातशत्रु से प्रश्न किया कि तुम यज्ञों में पशु हिंसा क्यों करते हो? उनको दिये गये उत्तर से सहमत न होने पर महात्मा बुद्ध ने अजातशत्रु को एक तिनका दिया और कहा कि इसके दो टुकड़े कर दो। फिर उन्होंने उन दो टुकड़ों को जोड़कर एक टुकड़ा करने को कहा। अजातशत्रु ने उन तो टुकड़ों को जोड़ने में अपनी असमर्थता बताई। इस

पर महात्मा बुद्ध बोले कि यदि तुम टुटे हुए को जोड़ नहीं सकते तो तोड़ते क्यों हो ? अजात शत्रु उनके तर्कों से प्रभावित हुआ और उसने यज्ञ के सभी पशुओं भेड व बकरियों को मुक्त कर दिया। **स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि यदि महात्मा बुद्ध वेद पढ़े हुए होते तो समाज का कल्याण होता। वेदों के यथार्थ स्वरुप से अनभिज्ञ महाबुद्ध नास्तिक बन गये जिससे देश का नुकसान हुआ।**

स्वामी श्रद्धानन्द ने ऋषि दयानन्द की चर्चा कर उनके कार्यों पर प्रकाश डॉला और कहा कि ऋषि दयानन्द ने वेदों का अध्ययन कर उसके यथार्थ स्वरुप का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने कहा कि पौराणिक पंडितों व विद्वानों ने वेदों का यथार्थ स्वरुप जाने बिना ही यज्ञों में पशुओं की हिंसा का प्रचार किया परन्तु आज महर्षि दयानन्द जी की कृपा से अधिकांश पौराणिक मान्यतायें असत्य व व्यर्थ सिद्ध हुई हैं। **स्वामी जी ने श्रोताओं को कहा कि हमें वेदानुकूल आर्य विचारधारा वाले परिवारों का निर्माण करना चाहिये।** स्वामी जी ने स्वामी दयानन्द के शब्दों को भी प्रस्तुत किया कि चार वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं व सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति के प्रणेता महाराज मनु के अनुसार वेद धर्म का मूल है। वेद साम्प्रदायिक ज्ञान नहीं है। वेदों का ज्ञान मनुष्यकृत न होकर ईश्वरकृत ज्ञान है। इन वैदिक सिद्धान्तों का स्वामी श्रद्धानन्द ने विस्तार से वर्णन किया। **स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आगे कहा कि परमात्मा व आत्मा के सत्य स्वरुप को जाने बिना जीवात्मा की मुक्ति नहीं होती।** जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है तथा फल भोगने में परतन्त्र अर्थात् ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन है। उन्होंने कहा कि वेदों की आज्ञाओं का पालन न करने वा उसके विरुद्ध आचरण करने से दण्ड मिलता है। परमात्मा ने वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में दिया था। उन्होंने बताया कि वेद ज्ञान, विचार, लाभ और सत्ता से युक्त हैं। **स्वामी जी ने यह भी बताया कि ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान केवल वेद ही है अन्य नहीं।** वेद से इतर सभी धार्मिक ग्रन्थों को उन्होंने साम्प्रादियक ग्रन्थ बताया। स्वामी जी ने कहा कि वेद में दो प्रकार की बातें हैं प्रथम विधेय व दूसरी निषिद्ध। उन्होंने कहा कि नागरिकों को संविधान के विरुद्ध कार्य करने पर दण्ड मिलता है। इसी प्रकार वेद की अवहेलना करने पर भी ईश्वरीय व्यवस्था से दण्ड मिलेगा। **वैदिक आज्ञाओं का पालन यदि नहीं करेंगे तो हमें अगला जन्म मनुष्य का नहीं मिलेगा।**

स्वामी जी ने कहा कि वेदों में यज्ञ करने का उपदेश दिया गया है। वेद सभी मनुष्यों को सत्य बोलना व सत्याचरण करना सिखाता है। **वेद सम्मत गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली देश में चलेगी तो विद्या की रक्षा होगी।** स्वामीजी ने कहा कि वेद में परा व अपरा दो प्रकार की विद्यायें हैं। इन्हें आध्यात्मिक व भौतिक ज्ञान के रूप में भी जाना जाता है। स्वामी जी ने सभी श्रोताओं को वेदों का स्वाध्याय करने की प्रेरणा की। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति परा व अपरा विद्याओं की खोज करना चाहे तो उसके लिए वेद परम प्रमाण हैं। वेद स्वतः प्रमाण हैं जिसकी पुष्टि के लिए अन्य प्रमाणों की आवश्यकता नहीं होती जबकि वेद से इतर अन्य सभी ग्रन्थ परतः प्रमाण की कोटि में आते हैं जिसके लिए वेद आदि ग्रन्थों के प्रमाणों की आवश्यकता होती है। स्वामीजी ने कहा कि मनुस्मृति के अध्ययन व सत्पुरुषों के आचरण को देखकर भी सत्य व सदाचरण का निर्णय किया जा सकता है। जो बात आत्मा को प्रिय लगती है वह भी सत्य हो सकती है। स्वामी जी ने चार वेदों के उपवेदों की चर्चा कर बताया कि आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्व वेद आदि उपवेद हैं। हमें वेदों का नित्य प्रति स्वाध्याय करना चाहिये। स्वामी जी ने ज्योतिष की चर्चा कर खगोल ज्योतिष को उपयोगी बताया और फलित ज्योतिष का खण्डन किया। अपने व्याख्यान को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि हमें ग्रहों के प्रभाव से नहीं अपितु अपने कर्मों से सुख व दुःखों की प्राप्ति होती है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बाद डॉ. रघुवीर वेदालंकार, दिल्ली ने अपने सम्बोधन में कहा कि **स्वामी दयानन्द जी ने देश को वेदों का पढ़ना व पढ़ाना सिखाया।** देश व विश्व में वेदों का प्रचार व प्रसार स्वामी दयानन्द जी ने ही किया। आर्य विद्वान् ने सन् १८६९ में काशी में ऋषि दयानन्द के पौराणिक विद्वानों के साथ मूर्ति पूजा पर शास्त्राार्थ की चर्चा की और बताया कि पौराणिक विद्वान स्वामी विशुद्धानन्द ने

अपने शिष्य पं. मोती लाल को वेदों को पढ़ने का परामर्श दिया था। डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी के द्वारा वेदों का संस्कृत व हिन्दी दोनों भाषाओं में भाष्य किये जाने से देश विदेश में वेदों का प्रचार हुआ। उन्होंने कहा कि मुसलमानों की कुरआन की तरह हिन्दुओं की वेदों पर श्रद्धा थी। उन्होंने अनेक उदाहरण देकर बताया कि स्वामी दयानन्द व उनके पूर्व सभी अच्छे व बुरे कार्य वा कर्मकाण्ड वेदों का नाम लेकर किये जाते थे। मनुस्मृति का उदाहरण देकर डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि देव श्रेणी के मनुष्यों व साधारण कोटि के मनुष्यों का वेद ही चक्षु है। उन्होंने कहा कि चक्षु किसी भी वस्तु को देखकर उसको साफ साफ बता देता है। उन्होंने आगे कहा कि ईश्वर को सभी लोग अपने अपने मत की मान्यताओं के अनुसार मानते हैं। डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि कोई व्यक्ति यदि चौथे आसमान का पता जानता है तो बताये? उन्होंने ईश्वर व ईश्वर के बेटे की चर्चा की और कहा कि यह कोई नहीं बताता कि वह कहां हैं? उन्होंने कहा कि वेदपाठी ईश्वर का पता बता सकता है। आचार्य रघुवीर वेदालंकार जी ने वेदमन्त्र **'वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् आदित्यवर्णम् तमसः परस्तात्।'** का उच्चारण कर कहा कि इस वेद मन्त्र के मुकाबले संसार की किसी पुस्तक में मन्त्र व विचार नहीं मिलेंगे। विद्वान् वक्ता ने कहा कि संसार के सभी मनुष्यों का परमेश्वर एक है। ईश्वर को जानने के लिए हम सबको वेदों को पढ़ना व पढ़ाना चाहिये। आज सभी लोग वेदों को ज्ञान व विज्ञान की पुस्तक मानते हैं। **वैदिक विद्वान ने जोर देकर कहा कि ऋषि दयानन्द जी का वेदार्थ ही यथार्थ वेदार्थ है।** वेद मनुष्यों को मनुष्यों की रक्षा करने का उपदेश देते हैं, इस रहस्य से भी विद्वान वक्ता ने श्रोताओं को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वेद लोभ वा लालच न करने का भी उपदेश देते हैं। इसी के साथ उन्होंने अपने सम्बोधन को विराम दिया।

डॉ. रघुवीर जी के बाद गुरुकुल के आचार्य धनंजय जी ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य केवल वेदों का प्रचार व प्रसार करना है। स्कूल व अस्पताल आदि बनाना आर्यसमाज का उद्देश्य व कार्य नहीं है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि सभी आर्यसमाजों में संस्कृत पाठशालायें होनी चाहिये जिसमें सभी आयुवर्ग के लोगों को संस्कृत सिखाने व पढ़ाने की अच्छी व्यवस्था हो। उन्होंने आगे कहा कि सभी आर्यसमाजों में वेदों को पढ़ाने की भी व्यवस्था होनी चाहिये। आचार्य धनंजय ने कहा कि गुरुकुल का प्रत्येक ब्रह्मचारी जब वेदों का प्रचारक वा प्रवक्ता बनेगा तभी आर्यसमाज सफल होगा। वेद वेदांग सम्मेलन सम्मेलन के समापन पर अध्यक्षीय भाषण में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने सबको गायत्री मन्त्र का पाठ कराया और कहा कि वेद-वेदांग के विषय में आपने डॉ. रघुवीर वेदालंकार, स्वामी श्रद्धानन्द और ब्रह्मचारी अजीत कुमार की चर्चायें सुनी। ऋषि दयानन्द ने वेद के पढ़ने व पढ़ाने तथा सुनने व सुनाने को आर्यों का परम धर्म कहा है। **पंच महायज्ञों की चर्चा कर स्वामी जी ने कहा कि सन्ध्या, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ छोटे होने पर भी महायज्ञ हैं।** स्वामी जी ने कहा कि वेदों को श्रुति भी कहा जाता है। प्राचीन काल में मनुष्यों की बुद्धि की शक्ति तीव्र होती थी जिससे वह वेदों को सुन कर उसका अर्थ भी ग्रहण कर लेते थे। समय व्यतीत होने के साथ मनुष्यों की बुद्धि में न्यूनता आई। अतः वेदों की रक्षा के लिए व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा व कल्प शास्त्रों वा ग्रन्थों का अध्ययन किया जाने लगा। स्वामीजी ने वेदाध्ययन के लिए इन सभी वेदांग ग्रन्थों के अध्ययन की आवश्यकता बताई। स्वामीजी ने कहा कि ६ वेदांगों के बाद ऋषियों ने ६ उपांगों अर्थात् ६ दर्शन ग्रन्थों की रचना की। ऋषि दयानन्द ने भी वेदाध्ययन में सहायक व उपयोगी सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा संस्कार विधि आदि ग्रन्थों की रचना कर वेदाध्ययन में अपना बहुमूल्य योगदान किया। स्वामीजी ने कहा कि जो व्यक्ति ऋषि के इन ग्रन्थों को पढ़ लेता है, वह वैदिक ज्ञान पढ़ लेता है। **उन्होंने कहा कि यदि आप संस्कृत व्याकरण नहीं पढ़ सकते तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो। सत्यार्थ प्रकाश के बाद संस्कार विधि को पढ़ो। यज्ञों का आधार संस्कार विधि है। स्वामीजी ने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द केवल संस्कारविधि ही लिखते तो भी संसार का बहुत बड़ा उपकार होता।** स्वामी जी ने विस्तार से ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का महत्व बताया और इस ग्रन्थ

की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस ग्रन्थ को बार-बार पढ़ना चाहिये। स्वामीजी ने पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की चर्चा कर कहा कि उन्होंने १८ बार सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा था। **उन्होंने आगे कहा कि सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना एक प्रकार से वेद का पढ़ना है।** इसी प्रकार संस्कारविधि और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को भी पूरी श्रद्धा से बार-बार पढ़ना चाहिये। स्वामीजी ने कहा कि अंग्रेजी पढ़ा लिखा व्यक्ति अपने उदर की सेवा ही करता है व करेगा। वह अपने राष्ट्र की और आपकी सेवा नहीं करेगा। गुरुकुल का स्नातक अपने देश के बारे में सोचता है। उन्होंने कहा कि अंग्रेजी पढ़ा हुआ व्यक्ति केवल अपनी भौतिक उन्नति के बारे में सोचता है। स्वामी जी ने यह भी कहा कि अंग्रेजी पढ़ा व्यक्ति इंजीनियर बन कर भवन निर्माण के कामों में सीमेंट आदि की आवश्यकता से कम मात्रा मिलाकर अपने स्वार्थों की पूर्ति करता है। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा कि यदि आप वेद और वेदांगों को नहीं पढ़ते तो यहां से सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि और ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को पढ़ने का संकल्प लेकर जायें। स्वामीजी ने श्रोताओं को सूचना दी की हरयाणा के श्री नन्दलाल जी इस उत्सव में एक वातानुकूलित बस व श्रद्धालु लेकर आयें हैं और उन्होंने गुरुकुल को इक्कीस हजार रूपये दान भी दिया है। कार्यक्रम के समापन पर गुरुकुल के मुख्य आचार्य धनंजय जी ने धर्म प्रेमियों को सावधान करते हुए कहा कि विदेशी लोग संस्कृत को अंग्रेजी भाषा के द्वारा पढ़ाने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। आचार्यजी ने कहा कि अंग्रेजी भाषा में चाचा, चाची, ताऊ, ताई, मौसा, मौसी, मामा व मामी, फूफा व बुआ आदि अनेकों सम्बन्धों को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं, अत: वह संस्कृत का क्या भला करेंगे। इसी के साथ वेद वेदांग सम्मेलन व सायंकालीन सत्र समाप्त हुआ। रात्रिकालीन सत्र में भजनोपदेशकों ने भजनों की प्रस्तुतियां दी। प्रवचन आदि भी हुए। इस प्रकार प्रथम दिन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

दूसरे दिन के उत्सव का वृत्तान्त

वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन ४ जून, २०१६ को प्रात:काल ७ बजे से सामवेद पारायण यज्ञ हुआ जिसके ब्रह्मा डॉ. सोमदेव शास्त्री थे। उनका सहयोग पं. यज्ञवीर जी कर रहे थे और वेद-मन्त्रोच्चारण गुरुकुल के ब्रह्मचारी कर रहे थे। यज्ञार्थ अनेक वेदियां बनाई गई थी जहाँ यजमान और याज्ञिक उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक यज्ञ सम्पन्न कर रहे थे। यज्ञ के अनन्तर डॉ. सोमदेव शास्त्री जी तथा डॉ. यज्ञवीर जी ने याज्ञिकों को सम्बोधित किया। यज्ञ के प चात सभी ने मिलकर प्रातराश लिया और उसके बाद **''वर्णाश्रम सम्मेलन''** आरम्भ हुआ। आरम्भ में गुरुकुल के ब्रह्मचारी सौरभ ने तीन भजन प्रस्तुत किए जिसमें एक के शब्द थे **'हर पल में हो प्रभु सुमिरन तेरा, ऐसा बना दो प्रभु जीवन मेरा। तेरी सेवा करते करते बीते जीवन मेरा।। हर पल में हो प्रभु सुमिरन तेरा।'** सम्मेलन का संचालन गुरुकुल के पूर्व ब्रह्मचारी आचार्य डॉ. रवीन्द्र ने किया। उन्होंने वैदिक धर्म व संस्कृति सहित वर्णाश्रम धर्म की चर्चा कर उस पर प्रकाश डॉला। उन्होंने बताया कि वैदिक सामाजिक व्यवस्था में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र तथा चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास होते हैं। गुरुकुल पौंधा के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। सम्मेलन के प्रथम वक्ता थे आर्य विद्वान श्री धर्मपाल शास्त्री।

श्री धर्मपाल शास्त्री ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में कहा कि वैदिक वर्ण व्यवस्था में चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते हैं। यह चार वर्ण संसार में हमेशा रहे हैं, कभी कम रहे और कभी अधिक और भविष्य में भी इसी प्रकार रहेंगे। उन्होंने कहा कि मानव जाति के तीन प्रमुख शत्रु अविद्या, अन्याय व अभाव सदा से रहे हैं। इनसे लड़ने के लिए तीन प्रकार की सेना की आवश्यकता होती है। अविद्या से ब्राह्मण लड़ता है। **उन्होंने कहा कि गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याध्ययन करना भारतीय गुरुकुलीय परम्परा की विशेषता है।** गुरु से गुरुकुल में रहकर वेदादि शास्त्रों का अध्ययन ही अविद्या के विरुद्ध लड़ना है। विद्या अध्ययन समाप्त होने पर जिस विद्यार्थी की जैसी योग्यता व गुण-कर्म-स्वभाव होते थे, परीक्षा के बाद उसे वैसा ही वर्ण दे दिया जाता था। अज्ञान के नाश का संकल्प लेने वाले स्नातक को, जो अज्ञान का नाश करने के योग्य होता था, उसे ब्राह्मण वर्ण दिया जाता था। विद्या पढ़कर देश से अभावों को

दूर करने का संकल्प लेने वाले योग्य स्नातक को वैश्य वर्ण दिया जाता था। इसी प्रकार समाज से अन्याय दूर करने का संकल्प लेने वाले योग्य स्नातक को क्षत्रिय वर्ण प्रदान किया जाता था। अध्ययन करने के बाद जो इन तीन वर्ण की योग्यता नहीं रखता था उसे शूद्र वर्ण दिया जाता था। श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि वैदिक व्यवस्था में शूद्रों को भी उन्नति के अवसर प्राप्त थे। उन्होंने कहा कि वैदिक वर्णव्यवस्था मनोविज्ञान व सामाजिक ज्ञान के आधार पर है। आगे चलकर स्वार्थी लोगों ने इस व्यवस्था में विसंगतियां पैदा की। उन्होंने कहा कि वर्ण बदला जा सकता है परन्तु जाति नहीं बदली जा सकती। विद्वान् वक्ता ने कहा कि जिनके प्रसव की प्रक्रिया समान होती है वह जाति कहलाती है।

श्री धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि समाज में जन्मना जातिवाद का प्रचलन यवनों की पराधीनता व अत्याचारों के कारण हुआ। आर्य विद्वान ने दुःख व आश्चर्य के साथ कहा कि एक विदेशी आक्रान्ता हजार बारह सौ की सेना लेकर आता है और भारत पर कब्जा कर लेता है। **उन्होंने कहा कि भारतीयों के असंगठन, फूट और जन्मना जातिवाद ने भारत को परतन्त्र बनाया था।** उन्होंने आश्चर्य के साथ बताया कि विदेशियों के साथ एक युद्ध में भारतीयों की चव्वन हजार की सेना नौ हजार ब्रिटिश सैनिकों से पराजित हो जाती है। गुलामी का कारण उन्होंने हमारी जाति प्रथा व परस्पर पक्षपातपूर्ण व्यवहार को बताया। उन्होंने कहा कि समाज का मुख ब्राह्मण, बाहू क्षत्रिय, उदर वैश्य और पाद शूद्र के समान होते हैं। शास्त्री जी ने आजादी के आन्दोलन में जेल का एक प्रसंग सुनाया और कहा कि स्वामी अभेदानन्द जी, पूर्वनाम वेदव्रतजी, और पंडित जवाहरलाल नेहरु जेल में साथ थे। मुसलमान जेल में कुरआन की आयतें सुनाते थे। जवाहरलाल जी ने स्वामी अभेदानन्द जी से वेद की बातें सुनाने को कहा तो उन्होंने वेदमन्त्र **'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्याम् शूद्रो अजायत।।'** का उच्चरण कर इसका अर्थ उन्हें सुनाया और कहा कि जिस देश में इस मन्त्र के अनुसार व्यवस्था होगी, जहां इसके अनुसार शिक्षक, रक्षक और व्यापारी उत्तम होंगे, वह देश उन्नति करेगा। पं. जवाहरलाल ने इस मन्त्र व स्वामी अभेदानन्द जी के अर्थ की प्रशंसा की और आश्चर्य से पूछा कि क्या यही वास्तविक वर्णव्यवस्था है? जवाहरलाल जी ने वर्ण के आधार पर समाज में प्रचलित जातियों के प्रति तो असहमति व्यक्त की परन्तु वेद मन्त्र के अर्थों को उचित बताकर उसकी सराहना की। इसी के साथ शास्त्री जी का यह सम्बोधन समाप्त हुआ।

इसके बाद सुप्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं. सत्यपाल सरल जी का प्रभावशाली भजन हुआ। भजन से पूर्व उन्होंने कहा कि जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था हमारे पतन का कारण रही है और अब भी है। उन्होंने कहा कि वैदिक काल में वेदों के आधार, युक्ति एवं तर्क से सिद्ध गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। दुःख भरे शब्दों में उन्होंने कहा कि आज एक अनपढ़ मूर्ख भी जन्म के आधार पर ब्राह्मण कहा जाता है। श्री सत्यपाल सरल ने गोविन्द पुरी आर्यसमाज में एक जाट सम्मेलन का उल्लेख कर बताया कि स्वामी प्रणवानन्द जी को आमन्त्रण मिलने पर जातीय आधार पर आयोजित इस सम्मेलन में जाने से स्वामी जी ने स्पष्ट इनकार कर दिया था। स्वामी जी के इस निर्णय की श्री सरल ने प्रशंसा की। सहस्रों की संख्या में धर्मप्रेमी श्रद्धालु जनसमुदाय को **उन्होंने कहा कि आप यहां से संकल्प लेकर जायें कि अपने नाम के साथ जाति सूचक शब्दों का प्रयोग नहीं करेंगे और न ही जीवन में जातिवाद को व्यवहार में लायेंगे।** इसके बाद उन्होंने एक प्रभाव ाली भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे **'जब तक यह शीशे का घर है, तब तक ही पत्थर का डर है।'** कार्यक्रम का संचालन कर रहे डॉ. रवीन्द्र कुमार ने कहा कि बहुत से लोग अपने बच्चों को गुरुकुल पढ़ाने में शंका करते हैं। उन्होंने मंच पर उपस्थित डॉ. आनन्द कुमार, आईपीएस की ओर संकेत कर कहा कि आप गुरुकुल झज्जर में पढ़े हैं। रवीन्द्र जी ने कहा कि गुरुकुल का विद्यार्थी जो बनना चाहे, बन सकता है, उसमें किसी प्रकार की रुकावट नहीं है।

वर्णाश्रम सम्मेलन में पंडित धर्मपाल शास्त्री के बाद बहिन कल्पना शास्त्री जी का सम्बोधन हुआ। विदुषी बहिन कल्पना शास्त्री ने कहा कि वर्णव्यवस्था राष्ट्र को चलाने के लिए थी और आश्रम व्यवस्था समाज सहित

मनुष्य की अपनी शारीरिक उन्नति के लिए थी। बाद में देश में आश्रम और वर्णव्यवस्था का रूप विकृत हो गया। उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी का अर्थ ब्रह्म के सान्निध्य में रहते हुए विद्या का अर्जन व पढ़ना होता है। विदुषी बहिन ने वर्तमान शिक्षा की अपूर्णता व इसकी विकृतियों का चित्रण किया। उन्होंने कहा कि आज नींव में घुन लगाने का प्रयास किया जा रहा है। विदुषी वक्ता ने कहा कि वर्णव्यवस्था गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित होती है न कि जन्म पर। समय के साथ इसमें परिवर्तन आया। उन्होंने कहा कि पहले जाति के आधार पर जनगणना नहीं होती थी। अंग्रेजों ने हमें बांटने के लिए जातिगत आधार पर जनगणना आरम्भ की थी। सन् १८३१ में पहली बार अंग्रेज अधिकारी रेशले ने जन्म व नस्ल के आधार पर जनगणना कराई। जातिगत आधार पर जनगणना होने से समाज में भिन्न भिन्न समुदायों में खाई बढ़ी है। **उन्होंने कहा कि देश के हित के लिए कोई जाति व उनका समुदाय सामने आकर आन्दोलन नहीं करता। जातिवाद हमें निरन्तर बांट रहा है जिस पर उन्होंने गहरी चिन्ता व दुःख व्यक्त किया।** उन्होंने बड़ी संख्या उपस्थित धर्मप्रेमी श्रोताओं को कहा कि हम सावधान रहते हुए जातिगत आधार पर आपस में बंटने से बचे।

सम्मेलन के अगले वक्ता डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि वर्णव्यवस्था हमें सुखी बनाने व हमारा लोक परलोक सुधारने के लिए है इसलिए हमारे वैदिक कालीन पूर्वजों ने वर्ण व्यवस्था को सुदृढ़ किया था। विद्वान आचार्य ने कहा कि महाभारत काल में वर्णव्यवस्था का उच्छेद होने लगा था फिर भी यह किसी न किसी रूप में चलती रही। श्री कृष्ण व सुदामा जी का उदाहरण देकर विद्वान् आचार्य ने कहा कि उज्जैन स्थित ऋषि सान्दीपनी के आश्रम में यह दोनों इतिहास प्रसिद्ध महापुरुष साथ-साथ पढ़ते थे और दोनों के बाद में भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहे। डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि आचार्य द्रोण ने महाभारत काल में वर्णव्यवस्था को उच्छिन्न कर दिया। उन्होंने कहा कि आचार्य द्रोण ने भौतिक अध्यापक बनकर महलों में जाकर राजकुमारों को पढ़ाया। इसके बाद जाति प्रथा अस्तित्व में आई। **आचार्य रघुवीर ने जाति प्रथा को देश का प्रबल शत्रु बताया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज व आर्यों ने जाति प्रथा को हिला तो दिया परन्तु उसे पूर्ण रूप से समाप्त नहीं किया।** आचार्य जी ने उत्तर प्रदेश का उदाहरण देकर कहा कि वहाँ एक ही जाति के लोगों को सरकारी पदों पर नियुक्त किया जा रहा है। बिहार व हरयाणा की स्थिति आप लोग देख चुके हैं। **जाति प्रथा मनुष्य को रसातल में पहुंचाती है। इतना जुल्म तो आतंकवादी भी नहीं करते जो जातिप्रथा के द्वारा हुआ है व होता है। हरयाणा में विगत समय जाति आन्दोलन के परिप्रेक्ष्य में आचार्य जी ने कहा कि वहाँ बड़ी संख्या में आर्यसमाजी भी है परन्तु फिर भी वहाँ मनुष्यता को शर्मसार करने वाली घटनायें घटी।**

विद्वान् आचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने कहा कि बौद्धिक काम करने वाला ब्राह्मण वर्ग में आता है। समाज व देश की रक्षा के काम करने वाला क्षत्रिय वर्ण में आता है। डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि वर्ण उसे कहते हैं जिसे स्वेच्छा से स्वीकार किया जाये। आज इन प्राचीन व्यवस्थाओं को जन्म पर आधारित जाति से जोड़ दिया गया है। आचार्य जी ने कहा कि शूद्र हमारे समाज के अंग हैं। **आचार्य रघुवीर जी ने कहा कि वर्तमान की राजकीय व्यवस्था भी जन्मना व्यवस्था की सहयोगी है। हमें संगठित होकर जन्मना जाति व्यवस्था का विरोध करना चाहिये। उन्होंने कहा कि जाति तोड़ों कहने से जाति कभी समाप्त नहीं होगी।** आचार्य जी ने कहा की गुरुकुलीय शिक्षा में शिष्यों को गुरु का सान्निध्य मिलता है जिससे उनका चरित्र बनता है। स्कूली शिक्षा में गुरु व शिष्य का सान्निध्य न बनने से इनके आपस का संबंध और चरित्र समाप्त हो गया है। आचार्य जी ने कहा कि आर्यसमाज द्वारा इनका स्वरुप निखारने का प्रयास किया जाना चाहिये। इसी के साथ विद्वान् वक्ता ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

वर्णाश्रम सम्मेलन के अगले वक्ता डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई ने अपने सम्बोधन में बताया कि बड़ोदा नरेश सयाजीराव गायकवाड़ ने आर्य विद्वान् पंडित आत्माराम अमृतसरी जी को अपने राज्य में दलितों के कल्याण व जन्मना जाति प्रथा के उन्मूलन का कार्य करने के लिए आमंत्रित किया था। उन्होंने

कहा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर को बड़ोदा नरेश से बीस हजार रूपयों का सहयोग कराया था जिससे वह विदेश जाकर अपनी पढ़ाई कर सके। **विद्वान् वक्ता ने कहा कि आर्यसमाज ने जातिवाद को जड़-मूल से उखाड़ने का काम किया है। आर्यसमाज ने मलकाने राजपूतों को इस लिए शुद्ध किया कि यह लोग हिन्दुओं में घुल-मिल जायें। उन्होंने यह भी बताया कि सैकड़ों की संख्या में आर्य समाजियों ने दलित कन्याओं से विवाह किये।** १९०१ की जनगणना की चर्चा कर उन्होंने बताया कि इसमें सिख व हिन्दुओं की पहली बार अलग अलग गणना दिखाई गई थी। उन्होंने बताया कि स्वर्णमन्दिर, अमृतसर का पुराना नाम हर मन्दिर है जहां पहले हिन्दू देवी देवताओं की मूर्तियां होती थीं। सिख बन्धु अपने विवाह भी हिन्दू रीति से हिन्दू पुरोहितों द्वारा ही कराते थे। उनके अनुसार अंग्रेजों ने हिन्दू व सिखों को आपस में बांटा। आचार्य सोमदेव शास्त्री ने हिन्दू समाज से जाति सूचक शब्दों को हटाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण वेदों का ज्ञानी व उनके लिए विहित कर्मों को करने वाला ही हो सकता है। उन्होंने श्रोताओं को पूछा कि आप सन्ध्या व हवन करते हैं या नहीं, इस पर आप विचार करें। विद्वान् वक्ता ने कहा कि मनुष्य के जन्म के समय उसकी कोई जाति नहीं होती। **उन्होंने कहा कि जब तक हम आर्यसमाज के नियमों को अपने जीवन व व्यवहार में नहीं लायेंगे तब तक हम जन्मना जातिवाद से बच नहीं सकते।** हमें अपने कार्यों व व्यवहार पर ध्यान देने की आवश्यकता है। आचार्य जी ने कहा कि संन्यासियों की कोई बिरादरी नहीं होती। संन्यासी सम्पूर्ण समाज का होता है और सम्पूर्ण समाज संन्यासी का अपना होता है। डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वेद के नियमों के पालन और उन पर आचरण व व्यवहार करने पर बल दिया। उन्होंने धर्मप्रेमी श्रोताओं को कहा कि वैदिक धर्म को पारिवारिक धर्म बनायें। जब वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म बनेगा तभी यह सामाजिक धर्म भी बनेगा। इसी के साथ उन्होंने अपने वक्तव्य को विराम दिया। इसके बाद गुरुकुल के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने दानियों की सूची पढ़कर सुनाई जिसमें भजनोपदेशक ओम् प्रकाश वर्मा, यमुनानगर, माता आशा वर्म्मा, श्री कृष्णमुनि वानप्रस्थी, श्री वेदप्रकाश गुप्ता, माता सुरेन्द्र अरोड़ा तथा माता पुष्पलता आर्या आदि अनेक नाम थे।

सम्मेलन के अगले वक्ता **डॉ. आनन्द कुमार, सेवानिवृत आईपीएस अधिकारी ने कहा कि हमने अपने कुशल व योग्य कामगारों को समाज में नीच बना दिया। समाज में जो काम न करने वाले लोग थे, उन्हें धोखा देने वाले व काम न करने वाले व्यक्तियों ने भगवान व मन्दिर का डर दिखाया। उन्होंने स्वयं को समाज में ऊंचा बना लिया। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि समाज में हमारे ब्राह्मण व अन्य उच्च वर्ण के लोग काम नहीं करते। मेहनत न करने वाले सब लोग समाज में सबसे ऊंचे हो गये। यह ऊंचे लोग मेहनत व हाथ के काम नहीं करते।** अब कुछ ने करना आरम्भ किया है। जो काम नहीं करते वह सबसे ऊंचे हो गये। राजपूत, ठाकुर आदि काम नहीं करते, वह ऊंचे हो गये। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि काम करने वालों को समाज में नीच बना दिया गया और काम न करने वालों को ऊंचा बना दिया गया। **गंदगी करने वाले ऊंचे तथा सफाई का काम करने वाले नीच व अछूत बना दिए गये।** विदेशों में बड़ी बड़ी वैज्ञानिक खोजें हुई हैं व हो रही हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि **हमारे यहां यूरोप के वैज्ञानिकों की तरह खोंजे क्यों नहीं होती? इसका कारण यह है कि हमारे यहॉं काम करने वालों को नीचा बना दिया गया। देश व समाज में श्रम का महत्व समाप्त होने से अव्यवस्था पैदा हुई है।**

हमारे पूर्वज ऋषि व विद्वान् वर्णाश्रम व्यवस्था के नाम पर नई व्यवस्था देकर नया समाज बनाना चाहते थे। गुलामी के दिनों में हमारे पास अपनी राज्य व्यवस्था नहीं थी। यह समाज परिवर्तन की व्यवस्था राज व्यवस्था के द्वारा ही चल सकती थी। **हम कोई नई उन्नत व विकसित सामाजिक व्यवस्था पैदा नहीं कर पाये। यदि हम जाति को भूलकर गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार शादी विवाह करते तो सामाजिक भेदभाव कम होता। हम अपने बच्चों के शादी विवाह भी अपनी पृष्ठभूमि वाले लोगों व वर्गों में ही करते हैं। जन्मना जाति प्रथा को हम**

आर्यसमाजी भी समाप्त नहीं कर पाये। जन्मना जाति व्यवस्था आर्यसमाज में भी किसी न किसी रूप में बनी हुई है। स्वामी दयानन्द सरस्वती नई सामाजिक व्यवस्था चाहते थे। हिन्दुओं की सामाजिक व्यवस्था में सुधार व परिवर्तन होना अपेक्षित था। श्री आनन्द कुमार जी ने स्वामी दयानन्द के कहे शब्दों को स्मरण कर कहा कि वह चाहते थे कि एक वेद मत समस्त भूगोल में प्रवृत्त हो जाये जिससे सभी लोग अपनी शक्ति व सामर्थ्य के अनुसार धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति कर सके। स्वामी दयानन्द जी चाहते थे कि भूगोल में गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था स्थापित हो और वेदों का सर्वत्र प्रचार हो। **हम किसी न किसी कारण, सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक, प्रचलित जन्मना जाति व्यवस्था को दूर न कर पाये। यह हमारी असफलता है।**

संसार के सभी मनुष्यों की जाति एक ही है जिसे मनुष्य जाति कह सकते हैं। इसके केवल दो भेद किये जा सकते हैं एक स्त्री व दूसरा पुरुष। उन्होंने कहा कि यहाँ उपस्थित सभी लोग संकल्प लें कि हम सब अपने को मनुष्य जाति का मानेंगे और जन्मना जाति के कृत्रिम व्यवहार से दूर रहेंगे। हमारी एक मनुष्य जाति ही है अन्य कोई जाति नहीं है। इस जन्मना जाति व्यवस्था को हमें पूर्णत: समाप्त करना होगा। हमें अपने आचार्यों के सहयोग से अपने गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार अपने योग्य वर्ण व कार्यों का चुनाव करना है। उन्होंने कहा कि वैदिक वर्ण व्यवस्था एक प्रकार से मनुष्यों के गुणों के आधार पर श्रम का निष्पक्ष रूप से किया गया विभाजन है। विद्वान वक्ता ने वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों के अलग अलग कामों व कर्तव्यों की चर्चा की और इनके यथार्थ स्वरूप पर प्रकाश डॉला। अतीत में किसी भी वर्ण, वर्ग व समूह के प्रति छुआछूत का तो कोई मतलब ही नहीं था। हमारी व्यवस्था अपने आपको उन्नत करने व ऊपर उठाने की है। हमारी गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था भी हमें ऊपर उठाने के लिए ही एक प्रभावशाली शिक्षा प्रणाली है। (श्री आनन्द कुमार स्वयं गुरुकुल झज्जर के विद्यार्थी रहे हैं।) उन्होंने कहा कि मनुष्य सत्व, रज व तम गुणों के प्रभाव व इन से सम्बन्धित अपनी प्रवृत्ति के अनुसार कर्म करता है। सात्विक गुणों वाले मनुष्य परोपकार, दान आदि अच्छे अच्छे श्रेष्ठ काम करते हैं जबकि तामसिक और राजसिक प्रवृत्ति व गुणों वाले व्यक्तियों के काम सात्विक गुणों की दृष्टि की तुलना में कहीं निम्नतर व निम्नतम होते हैं। इसको विद्वान् वक्ता ने अनेक उदाहरण देकर स्पष्ट किया। वैदिक वर्ण व्यवस्था जीवन में श्रेष्ठ व उन्नत बनने की प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर उन्नति के अवसर प्रदान करती है जो सभी बुराईयों से मुक्त है। समयाभाव के कारण विद्वान वक्ता ने यहीं पर अपने वक्तव्य को विराम दिया। इस सम्बोधन के बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारी श्री कैलाश आर्य, सुखदेव आर्य, कार्तिक आर्य, सत्यप्रकाश आर्य, नितिन आर्य, देव आर्य, सन्त लाल आर्य, पीताम्बर आदि को पं. नारायण मुखर्जी, पं. भीमसेन वेदवागीश, डॉ. यज्ञवीर जी के माता-पिता, श्री देवदत्त बाली, श्री पृथिवीराज भाटिया आदि की स्मृति में पुरुस्कार प्रदान किये गये।

सम्मेलन के समापन पर अध्यक्षीय भाषण देते हुए स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती ने कहा कि १६ वर्ष पूर्व संस्थापित गुरुकुल पौंधा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अनेक ग्रन्थों को कण्ठस्थ किया हुआ है जिसमें से कुछ ने उन्हें आपके सामने प्रस्तुत किया है। स्वामीजी ने बताया कि आपके इस गुरुकुल ने सुदूर दक्षिण भारत के तिरुपति नगर में प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरुस्कार प्राप्त कर एक रिकार्ड बनाया। उन्होंने कहा कि इस गुरुकुल को आपका पूरा सहयोग मिला है। स्वामीजी ने प्रमुख सहयोगियों के नाम भी श्रोताओं को बताये और उनका धन्यवाद किया। स्वामीजी ने १६ वर्ष पूर्व गुरुकुल की स्थापना के प्रथम दिवस देहरादून आने के संस्मरण भी सुनाये और कहा कि हमें देहरादून के लोगों का भरपूर सहयोग मिला। स्वामी जी ने इस वर्ष गुरुकुल में बने १७ कमरों की जानकारी दी और श्रोताओं से सहयोग करने की अपील की। स्वामीजी ने वर्णाश्रम सम्मेलन में बहिन कल्पना शास्त्री जी और डॉ. रघुवीर जी के व्याख्यानों का उल्लेख कर उनकी सराहना की। उन्होंने डॉ. रघुवीर जी से जुड़े अपने गुरुकुलीय जीवन के कुछ संस्मरण भी सुनाये और गुरुकुल की स्थापना और संचालन में पं. धर्मपाल शास्त्री और पं. ओमप्रकाश वर्मा, यमुनानगर के योगदान की

चर्चा कर उनका धन्यवाद किया। **स्वामी जी ने कहा कि यदि हम वर्णाश्रम व्यवस्था को ठीक कर लेंगे तो हमारी सामाजिक गाड़ी अच्छी तरह से दौड़ेगी। उन्होंने कहा कि जातिवाद से समाज खोखला हो गया है। 'समान प्रसवः जाति' के सिद्धान्त को ही उन्होंने ग्राह्य बताया। उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण मनुष्य जाति एक जाति है जिस प्रकार से गाय, बकरी, भैंस, अश्व आदि जातियां हैं। वर्णव्यवस्था को उन्होंने ऋषियों की व्यवस्था बता कर उनका योग्यता के आधार पर होना बताया। उन्होंने कहा कि समाज में सबके कर्तव्य अलग अलग होते हैं। योग्यता का प्रमाण पत्र आचार्य द्वारा दिया जाता है। वह जो कहेगा वही उसका वर्ण होगा।** स्वामी जी ने चार वैदिक आश्रमों का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि **विद्या और धर्म की उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य आश्रम किया जाता है।** वानप्रस्थ आश्रम कमियों को दूर करने के लिए होता है। संन्यास आश्रम पूर्ण विद्या और पूर्ण वैराग्य के होने पर होता है। आश्रम व्यवस्था में संन्यासी के लिए सब व्यवहार त्यागने योग्य होते हैं परन्तु वेद को छोड़ने का विधान नहीं है। स्वामी जी ने अपने बारे में कहा कि मैं ब्रह्मचारियों को पढ़ाकर व संन्यासियों के कुछ कर्तव्यों का पालन करने के बाद ही रोटी खाता हूं। उन्होंने कहा कि संन्यासी सब प्राणियों को अभय दान देता है। **समाज स्वस्थ रहे, सबकी उन्नति हो इसलिए ऋषियों ने हमें वर्ण व्यवस्था दी है। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए स्वामी जी ने सबका धन्यवाद किया।** सायंकालीन सत्र में सामवेद पारायण यज्ञ हुआ जिसके बाद भजन हुए। भजनों के बाद गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन हुआ जिसमें अनेक विद्वानों के सम्बोधन व अन्य प्रस्तुतियां हुई। रात्रिकालीन सभा में भी भजन व विद्वानों के प्रवचन हुए। इस प्रकार द्वितीय दिवस सम्पन्न हुआ।

तृतीय दिवस का वृत्तान्त

वार्षिकोत्सव के समापन दिवस रविवार ५ जून, २०१६ को प्रातः सामवेद परायण यज्ञ डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के अनन्तर आचार्य डॉ. यज्ञवीर ने कुछ वेदमन्त्रों की व्याख्यायें की। यज्ञ की पूर्णाहुति हुई जिसके पश्चात् गुरुकुल के ब्रह्मचारी सौरभ ने तीन भजन प्रस्तुत किये। इसके बाद भजन व प्रवचन सत्र आरम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता आर्यजगत के वयोवृद्ध भजनोपदेशक श्री ओम् प्रकाश वर्म्मा, यमुनानगर ने की। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रवीन्द्र आर्य ने प्रथम आर्य विद्वान् पं. वीरेन्द्र शास्त्री को प्रवचन के लिए आमंत्रित किया। श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने उपनिषदों में आई महर्षि अलूश द्वारा एक राजा के यहां यज्ञ कराने की कथा सुनाई। उन्होंने कहा कि निर्धारित तिथि पर महर्षि अलूश को कहीं जाना पड़ गया अतः उन्होंने अपने एक शिष्य को राजा के यहां यज्ञ कराने के लिए भेजा। महर्षि के यह शिष्य यज्ञ के ब्रह्मा पद पर आसीन हुए। यज्ञ आरम्भ करने से पूर्व राजा खड़े हुए और उन्होंने यज्ञ के ब्रह्मा व महर्षि अलूश के शिष्य से प्रश्न किया कि कृपया बतायें कि **यज्ञ किसमें प्रतिष्ठित है?** शिष्य उत्तर नहीं दे सका। वह महर्षि के पास आया और पूरी घटना से उन्हें अवगत कराया। महर्षि अलूश को भी इस प्रश्न का उत्तर ज्ञात नहीं था, अतः वह अपने शिष्य सहित राजा के पास गये और उनसे प्रश्न किया कि राजेन्द्र! आप ही हमें बतायें कि **यज्ञ किसमें प्रतिष्ठित है?**

राजा ने कहा कि **यज्ञ वेदों में प्रतिष्ठित है।** वेदों में यज्ञ बीज रूप में है। ऋषियों ने उसे वृक्ष रूप देकर हमें प्रदान किया है। महर्षि अलूश ने राजा से पुनः प्रश्न किया कि **वेद किसमें प्रतिष्ठित हैं? राजा ने उत्तर दिया कि वेद वाणी में प्रतिष्ठित हैं?** वाणी किसमें प्रतिष्ठित है, प्रश्न किये जाने पर उत्तर मिला कि **वाणी मन में प्रतिष्ठित है।** पुनः प्रश्न होने पर राजा ने कहा कि **मन अन्न में प्रतिष्ठित है।** विद्वान् वक्ता श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि **अन्न का सूक्ष्म भाग ही मन बनता है।** पुनः प्रश्न हुआ और उत्तर मिला कि **अन्न जल में प्रतिष्ठित है। जल तेज में प्रतिष्ठित है।** उन्होंने कहा कि जब गर्मी बढ़ती है तो लोग कहते हैं कि वर्षा होगी। इस प्रकार **जल तेज वा अग्नि में प्रतिष्ठित है। तेज आकाश में प्रतिष्ठित है।** आकाश किसमें प्रतिष्ठित है, प्रश्न किये जाने पर राजा ने कहा कि **आकाश ब्रह्म में प्रतिष्ठित है।** फिर प्रश्न हुआ कि **ब्रह्म किसमें प्रतिष्ठित है? उत्तर दिया कि ब्रह्म स्वयं ब्रह्म में ही प्रतिष्ठित है।** विद्वान वक्ता के अनुसार इसका उत्तर यह भी है कि **ब्रह्म**

ब्राह्मण में प्रतिष्ठित है। पं. वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि **ब्राह्मण वह होता है जिसने समाधि को सिद्ध करके ब्रह्म अर्थात् ईश्वर का साक्षात्कार किया हो।** प्रश्न हुआ कि **ब्राह्मण किसमें प्रतिष्ठित है? इसका उत्तर दिया गया कि ब्राह्मण व्रत में प्रतिष्ठित है और बताया कि व्रत अर्थात् सभी शुभ संकल्प यज्ञ में प्रतिष्ठित हैं।** श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि **जिस मनुष्य ने अपना जीवन यज्ञमय बना लिया वह मनुष्य ही व्रती है। उन्होंने कहा कि हम सभी मनुष्यों को याज्ञिक अर्थात् यज्ञ करने वाला होना चाहिये।**

आर्यसमाज के विद्वान् पुरोहित पं. वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि सभी मनुष्यों के लिए यज्ञ करना अनिवार्य है। **जो गृहस्थी मनुष्य यज्ञ नहीं करता वह पापी होता है। उन्होंने कहा कि क्योंकि देवयज्ञ-अग्निहोत्र एक महायज्ञ है अतः यज्ञ न करने वाला महापापी हो जाता है। उन्होंने समझाया कि यज्ञों को करने से पुण्य नहीं मिलता अपितु न करने से महापाप लगता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य अपने ऊपर तीन ऋण देव ऋण, ऋषि ऋण और पितृ ऋण लेकर उत्पन्न होता है। यह पंच महायज्ञ इन तीन ऋणों को चुकाने या उतारने के लिए किए जाते हैं।** उन्होंने समझाया कि माता, पिता व आचार्य का ऋण उनकी सेवा व आज्ञापालन कर चुकाया जाता है। इससे ऋण उतरता है न कि ऐसा करने से कोई पुण्य होता है। उन्होंने कहा कि हम सन्ध्या वा ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ अग्निहोत्र, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ अपने ऊपर ऋण को उतारने के लिए करते हैं। इसमें कोई पुण्य नहीं लगता। इन यज्ञों को करने से ऋण उतरता है। **अपनी वाणी को विराम देते हुए वैदिक विद्वान वीरेन्द्र शास्त्री ने श्रोताओं का आह्वान किया कि आप व्रती व याज्ञिक बने।**

श्री वीरेन्द्र शास्त्री के बाद जगत के वयोवृद्ध विद्वान पं. धर्मपाल शास्त्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि सन् १९३४ में आर्यसमाज के विद्वान श्री राजेन्द्रनाथ शास्त्री ने गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली की स्थापना की थी। २ तीन वर्ष चलकर यह गुरुकुल बन्द हो गया था। बीच में इस गुरुकुल में दो-तीन आचार्य आये परन्तु गुरुकुल नहीं चला। छत्तीस-सैंतीस वर्ष पूर्व आचार्य हरिदेव जी यहां दो-चार ब्रह्मचारी लेकर आये और इस गुरुकुल का उद्धार किया। आचार्य हरिदेव जी ने तब से अब तक जितनी भी विघ्न व बाधायें आयीं उन सब व्यवधानों व कठिनाईयों का सफलतापूर्वक सामना किया। आचार्य हरिदेव जी आरम्भ में इस गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को स्वयं पढ़ाते भी थे और उनके भोजन की व्यवस्था भी करते थे। परमात्मा में निष्ठा हो, संकल्प सत्य हो तो अपेक्षित पुरूषार्थ करने पर यह हो नहीं सकता कि मनुष्य को सफलता न मिले। इनके होने पर रास्ते की सभी बाधायें दूर हो जाती हैं तथा उन्नति होती है। गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के बाद आचार्य हरिदेव जी ने हरयाणा में मंझावली में दूसरा गुरुकुल खोला और इसी परम्परा में देहरादून का पौंधा में यह तीसरा गुरुकुल है। इस गुरुकुल को स्थापित हुए १६ वर्ष हो गये हैं। आचार्य हरिदेव जी संन्यास आश्रम में प्रवेश कर अब स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के रूप में हमारे सामने हैं। इनका व आचार्य धनन्जय जी का तप व परिश्रम हमारे सामने हैं। पं. धर्मपाल शास्त्री ने सहस्रों की संख्या ने उपस्थित श्रोताओं को कहा कि आप भारत भर के गुरुकुलों को जाकर देख लो, इस गुरुकुल के सामने सब फीके पड़ जायेंगे।

पं. धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि किसी मनुष्य की ४ दिन की जिन्दगी १०० काम आती है और किसी की १०० वर्ष की जिन्दमी में कुछ नहीं होता। उन्होंने स्वामी प्रणवानन्द जी के गुरुकुल आन्दोलन की चर्चा को जारी रखते हुए कहा कि स्वामी जी ने उड़ीसा में बालकों के लिए अलग व बालिकाओं के लिए अलग दो गुरुकुल खोले। एक गुरुकुल गोमत अलीगढ़ में और एक गुरुकुल छत्तीसगढ़ में खोला। केरल में भी एक गुरुकुल खोला। वहां सोलह-सतरह विद्यार्थी अध्ययनरत है। उनके आचार्य भी इस उत्सव में पधारे हुए हैं। आचार्य धर्मपाल शास्त्री ने कहा कि यहां उपस्थित सभी ऋषि भक्तों का दायित्व हो जाता है कि इन गुरुकुलों के संचालन में किसी प्रकार की कोई बाधा न आने पाये। आप इन गुरुकुलों के लिए तन मन व धन से सहयोग करें। अपने वक्तव्य को विराम देते हुए **पं. धर्मपाल शास्त्री जी ने कहा कि जो व्यक्ति थक कर बैठ जाता है उसे मन्जिल नहीं मिला करती।**

पं. धर्मपाल शास्त्री के पश्चात आर्यजगत के विख्यात गीतकार और भजनोपदेशक पं. सत्यपाल पथिक, अमृतसर ने अपना एक स्वरचित और प्रिय भजन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि लोग पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द और महाशय अमीचन्द को पागल कहा करते थे। इन्हीं की भावनाओं पर आधारित उन्होंने अपनी संगीतमय रचना **''मैं पागल हूं दीवाना हूं, मैं मस्त मस्त मस्ताना हूं। जो शमा जलाई ऋषिवर ने, उस शमा का मैं परवाना हूं''** को गहरे भक्तिभाव में भरकर प्रस्तुत किया। पथिक जी के इस भजन को सुनकर श्रोताओं के रूप में उपस्थित सभी ऋषिभक्त इन महान आत्माओं के त्याग व बलिदान की भावनाओं में एकाकार होकर भाव विभोर हो गये। अनेक श्रोता तो भजन के शब्दों में एकाकार हुए अपनी अश्रुधारा को बहने से रोक नहीं पाये। भजन वा गीत की समाप्ति पर तालियों की गड़गड़ाहट ने भजन की महत्ता को सिद्ध कर दिया।

इस भजन के बाद गुरुकुल गोमत अलीगढ़ उत्तर प्रदेश के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का प्रवचन हुआ। स्वामीजी ने अपने सम्बोधन में आचार्य चाणक्य का उल्लेख कर उनके द्वारा प्रस्तुत प्रश्न **'सुखस्य किम् मूलम?** का उल्लेख किया और बताया कि सभी प्राणी अपने जीवन में सुख की चाहना करते हैं। इस प्रश्न का उत्तर आचार्य चाणक्य के शब्दों में प्रस्तुत कर उन्होंने कहा कि **'सुखस्य मूलम् धर्म'** अर्थात् सुख का मूल, कारण व आधार धर्म होता है। धर्म के आचरण से ही सुखों की प्राप्ति होती है। इसके बाद उन्होंने प्रश्न किया कि धर्म का मूल क्या है? इसका उत्तर प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि उपनिषदों में धर्म के तीन स्कन्धों यज्ञ, तप और गुरुकुल वासी ब्रह्मचारी का वर्णन किया गया है। इनको अपनाने से धर्म बढ़ता है। धर्म के कामों की रक्षा व उनके पालन से सुखों की प्राप्ति होती है। यज्ञ धर्म का प्रथम स्कन्ध है। इसे किसी मनुष्य को नहीं छोड़ना चाहिये। ऋषि परम्परा के ग्रन्थों के निरन्तर स्वाध्याय व उनकी शिक्षाओं के आचरण, पालन व इन्हें धारण करने से धर्म की रक्षा होती है। सुपात्रों को दान देने से भी धर्म की रक्षा होती है। सुपात्रों की परीक्षा कर उन्हें अवश्य ही दान देना चाहिये। सुपात्रों को दिये गये दान से सुख, यश व परलोक में सुख की प्राप्ति होती है, ऐसा ऋषि दयानन्द का मत है।

धर्म का दूसरा स्कन्ध तप है। जो मनुष्य तप नहीं करता उसके जीवन में निश्चय ही सन्ताप वा दु:ख, विघ्न व बाधायें आती हैं। मनुष्य को जीवन में तप अवश्य करना चाहिये। स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को विद्यार्थी कहते हैं और गुरुकुल में पढ़ने वालों को तपस्वी या ब्रह्मचारी। क्लेश व दु:खों से बचने के लिए मनुष्यों को तपस्वी बनना चाहिये। विघ्न व बाधाओं को सहन करने का नाम तप है। मान व अपमान से ऊपर उठना व अपमान को सहन करना तप है। ब्रह्मचारी को आचार्यकुल अर्थात् गुरुकुल में रहना चाहिये जिससे उसका शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक विकास होता है और वह द्विजत्व को प्राप्त होता है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस प्रसंग को प्रस्तुत कर गुरुकुलों में आयोजित होने वाले उपनयन, वेदारम्भ व समावर्तन संस्कारों की चर्चा भी की व उनके स्वरूप पर प्रकाश डॉला। स्वामी जी ने समावर्तन संस्कार के अवसर पर ब्रह्मचारी को दिये जाने वाले उपदेश, सत्यं वद, धर्म चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद: आदि वाक्यों की चर्चा भी की। स्वामी जी ने कहा कि समावर्तन पर आचार्य ब्रह्मचारी को यह भी उपदेश करता है कि यदि तुमने हमारे भीतर कोई दुर्गुण देखा हो तो उसकी अनदेखी कर देना और जो गुण देखें हों तो उसे अपनाकर उन पर आचरण करना। ब्रह्मचारियों को गुरुकुलों में आर्ष ग्रन्थों, जो विद्या के स्रोत हैं और अविद्या रहित हैं, की शिक्षा दी जाती है। **उन्होंने कहा कि गुरुकुलों में ज्ञान, विद्या, देशभक्ति, माता-पिता का आदर-सत्कार व सेवा तथा चरित्र की जो शिक्षा मिलती है वह दुनियां के किसी स्कूल में नहीं मिलती।** स्वामी प्रणवानन्द जी द्वारा किये गये व किये जा रहे वैदिक शिक्षा प्रचार व प्रसार के कार्यों की स्वामी श्रद्धानन्द ने प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि गुरुकुल पौंधा का उत्सव, उत्सव न होकर आर्यों का एक विशाल मेला बन गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि हम सबको गुरुकुलों को सींचना चाहिये। उन्होंने कहा कि संसार के श्रेष्ठ कार्यों में दान देना भी एक कार्य है और सबसे बड़ा व श्रेष्ठ दान विद्या का दान है। दान विषयक वेद सम्मत इस सिद्धान्त को उन्होंने

मनु महाराज का दिया हुआ बताया। **स्वामी जी ने कहा कि आचार्य और ब्रह्मचारी का परस्पर संबंध पिता व पुत्र का होता है।** स्वामी जी ने प्रश्न किया कि पुण्य क्या होता है? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि सबसे बड़ा पुण्य ब्रह्मचर्य से युक्त जीवन होता है। ब्रह्मचर्य से बढ़कर संसार में दूसरा कोई पुण्य नहीं होता। स्वामीजी ने ईश्वर की चर्चा की और कहा कि ईश्वर का ज्ञान वेद है जो उसने हमें सृष्टि के आरम्भ में दिया था। यह वेद ही संसार, ईश्वर व आत्मा विषयक सभी सत्य विद्याओं का स्रोत है। इन वेदों का अध्ययन ही हमारे गुरुकुलों में कराया जाता है। उन्होंने सहस्रों की संख्या में उपस्थित धर्म प्रेमी ऋषिभक्तों को गुरुकुलों को तन, मन व धन से सींचने का आह्वान किया। स्वामी जी ने जैनियों द्वारा कलशों की निलामी की चर्चा कर कहा कि कोई दान छोटा नहीं होता। सामर्थ्यानुसार सबको दान देना चाहिये। अन्तिम वाक्य **'आप गुरुकुलों को जितना दान दे सकते हैं, अवश्य दें'** कह कर अपने वक्तव्य को विराम दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द के पश्चात मुम्बई के आर्य विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री ने अपने सम्बोधन में ब्रह्मचारियों के गुणों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि माता-पिता एवं आचार्य अपने ब्रह्मचारियों की रक्षा किया करते हैं। माता-पिता जब अपनी सन्तान को गुरुकुल में अध्ययन हेतु लाते हैं तो उपनयन और वेदारम्भ संस्कार के अवसर पर गुरुकुल का आचार्य घोषणा करता है कि **मैं आपके पुत्र को पढ़ा लिखा कर उसकी बुद्धि की उन्नति करुंगा।** वह कामना करता है कि ब्रह्मचारी का गुरुकुल में स्वाध्याय अच्छा हो व पठन पाठन उत्तम हो। इसके साथ ही आचार्य ब्रह्मचारी की शारीरिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति की बातें कहता है। डॉ. सोमदेव जी ने कहा कि यही यथार्थ शिक्षा है। आचार्य ब्रह्मचारी के माता-पिता को यह भी बताता है कि वह उसकी मस्तिष्क व भावनाओं को विकसित करने का कार्य करेगा जिससे राष्ट्र की उन्नति में ब्रह्मचारी अपना योगदान कर सके। आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री ने वर्तमान काल की विपरीत परिस्थितियों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि आज की शिक्षा में दूसरों के हितों की चिन्ता नहीं की जाती और इसके साथ ही वर्तमान काल की शिक्षा स्वार्थों व निजी हितों को सिद्ध करने की पोषक है। विद्वान् आचार्यजी ने कहा कि ईश्वर की उपासना से मनुष्य को बल प्राप्त होता हे। ईश्वर से प्राप्त इस आत्मिक बल का यह महत्व है कि वह बड़े से बड़े दुख से भी डरता नहीं है। **उन्होंने कहा कि आजकल जो युवा आत्महत्या जैसा घृणित कार्य करते हैं उसका कारण उनके पूर्ण आत्मिक विकास का न होना है। इसके साथ ही डॉ. सोमदेव शास्त्री ने महत्वपूर्ण बात यह कही कि आत्मा का पूर्ण विकास केवल गुरुकुल व गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से ही होता है।**

डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि माता-पिता की सेवा व सम्मान करने वाले, अपने भाई व बहिनों से प्रेम व स्नेह रखने वाले तथा देश को अपना जीवन समर्पित करने वाले युवा केवल गुरुकुल में ही बनते हैं। विद्वान् वक्ता ने स्वामी प्रणवनानन्द जी द्वारा देश भर में चलाये जा रहे ९ गुरुकुलों की चर्चा कर उनकी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इन गुरुकुलों से वेद की शिक्षाओं के अनुरूप मानव का निर्माण हो रहा है। आचार्य सोमदेव जी ने स्वामी श्रद्धानन्द व उनके गुरुकुल कांगड़ी की चर्चा की और कहा कि उन्होंने वायसराय चेम्सफोर्ड द्वारा प्रतिवर्ष एक लाख का गुरुकुल को अनुदान देने का प्रस्ताव ठुकरा दिया था। इसका कारण था कि वैदिक शिक्षा के अध्ययन, प्रचार व प्रसार में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो और देश का सम्मान बना रहे। वेदों के आचार्य और देश भर में वेद पारायण यज्ञों के ब्रह्मा पद को सर्वाधिक सुशोभित करने वाले आचार्य डॉ. सोमदेव शास्त्री ने कहा कि **यदि घर पर नियमित अग्निहोत्र यज्ञ हुआ करेगा तो हमारी सन्तान भी सुरक्षित रहेंगी और घर के वृद्धों का बुढ़ापा भी सुरक्षित रहेगा। उन्होंने चेतावनी दी कि बिना नियम पूर्वक यज्ञ किये आपकी सन्तानें व आपका बुढ़ापा सुरक्षित नहीं बचेगा।** शास्त्री जी के प्रवचन के बाद ऋषिभक्तों से प्राप्त दान आदि की घोषणायें करने के बीच **गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय ने कहा कि हमारा उद्देश्य आर्ष विद्या का प्रचार व प्रसार करना तथा वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा करना है। उन्होंने इस कार्य में सहायक बनने के लिए सभी ऋषि भक्तों से अपील की।**

आर्य विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार ने अपने सम्बोधन में कहा कि धर्म के नाम पर देश में जो पाखण्ड व अन्धविश्वास चल रहे थे, महर्षि दयानन्द ने उन सबका विरोध अपनी पूरी शक्ति से किया। उन्होंने कहा कि वैदिक धर्म व संस्कृति का संरक्षण हमारे गुरुकुलों में हो रहा है। वैदिक विद्वान् ने कहा कि अन्तिम व्यक्ति तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने का कार्य हमारे गुरुकुल कर रहे हैं। मनुष्यों को अपनी व्यक्तिगत व सामाजिक बुराईयों को छोड़ने की प्रेरणा आर्यसमाज व गुरुकुलों से ही मिलेगी। विद्वान वक्ता ने कहा कि धर्म व संस्कृति की रक्षा करने के लिए धर्मरक्षक, पुरोहित व धार्मिक विद्वान गुरुकुलों से ही मिलेंगे। उन्होंने आर्यसमाज व गुरुकुलों को परस्पर पूरक बनने की प्रेरणा की।

रविवार ५ जून, सन् २०१६ के इस समापन सत्र में वेदों एवं सत्यार्थ प्रकाश के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. रघुवीर वेदालंकार को पं. राजवीर शास्त्री की स्मृति में सम्मानित किया गया। डॉ. रघुवीर वेदालंकार न केवल वेदों के शीर्षस्थ विद्वान ही हैं अपितु उन्होंने वैदिक विचारधारा पर उपदेश देने सहित उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना भी की है। आपने गुरुकुल पौंधा में रहकर इसके ब्रह्मचारियों को पढ़ाया है। आप गुरुकुल पौंधा के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के गुरुकुल झज्जर में सहपाठी रहे हैं और समय समय पर गुरुकुल गौतम नगर में आयोजित चतुर्वेद पारायण यज्ञों के ब्रह्मा मनोनीत होकर उन्हें सम्पन्न कराते आ रहे हैं। गुरुकुल पौंधा से आपका विशेष प्रेम है। यही कारण है कि आपका अन्यत्र जाने का कार्यक्रम था जिसे गुरूकुल के आचार्य धनंजय जी के निवेदन पर निरस्त कर आप यहां देहरादून पधारे। डॉ. धनंजय जी ने ऋषिभक्तों को आपकी सेवाओं से अवगत कराया और आपके प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की। अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत गुरुकुल के पूर्व ब्रह्मचारी और हरिद्वार के एक महाविद्यालय में प्रवक्ता डॉ. रवीन्द्र आर्य ने स्वलिखत संस्कृत भाषा के अभिनन्दन पत्र का वाचन किया। पं. राजवीर शास्त्री जी के दो पुत्रों एवं उनके निकट–संबंधी गुरुकुल कांगड़ी में वेद विभाग के अध्यक्ष डॉ. दिनेश चन्द्र शास्त्री ने डॉ. रघुवीर वेदालंकार के गले में मोतियों का हार पहनाया। उन्हें शाल भी ओढ़ाया गया और अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। अपने अभिनन्दन के प्रति उद्‌गार व्यक्त करते हुए डॉ. रघुवीर जी ने कहा कि **गुरुकुल का परिवार ही हमारा परिवार होता है।** उन्होंने व्यंग में कहा कि डॉ. धनंजय ने उनके साथ छल किया है उसी का परिणाम यह अभिनन्दन का आयोजन है। उन्होंने बताया कि कुछ दिन पूर्व डॉ. धनंजय ने मुझसे मेरा परिचय मांगा था, तब मैं इनकी योजना को समझ नहीं सका था। उनकी उस योजना का मूर्त रूप मुझे आज देखने को मिला। **पं. राजवीर शास्त्री जी जैसे तपस्वी विद्वान की स्मृति में अभिनन्दन किये जाने से मुझे प्रसन्नता है। पं. राजवीर शास्त्री जी ने मुझे पढ़ाया भी है। डॉ. रघुवीर जी ने कहा यह गुरुकुल पं. राजवीर शास्त्री जी की स्मृतियों को संजोए हुए है। आचार्य रघुवीर जी ने यह भी कहा कि इस गुरुकुल से आरम्भ से ही मेरी आत्मीयता बन गई है।** डॉ. रवीन्द्र आर्य का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि १६ से २५ वर्ष तक युवावस्था हाती है। मैंने श्री रवीन्द्र को पढ़ाया भी है। मैं भी इन्हें सम्मानित करता हूं। यह कहकर उन्होंने अपनी शाल डॉ. रवीन्द्र आर्य जी को ओढ़ा दी। उन्हें अभिनन्दन के रूप में जो नगद धनराशि दी गई थी वह भी उन्होंने गुरुकुल पौंधा द्वारा संचालित एक अन्य न्यास के कार्यों के लिए भेंट कर दी। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे इस बात की भी प्रसन्नता है कि यह गुरुकुल १६ वर्ष का युवा गुरुकुल है।

डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी के अभिनन्दन के बाद आर्यजगत के सुप्रसिद्ध विद्वान् एवं अपने मनमोहक अन्दाज व गरजती हुई आवाज में आर्यसमाज के भजन व गीत गाने वाले पंडित सत्यपाल सरल जी का भजन हुआ। उनके भजन को सुनकर सभी श्रोता रोमांचित हो उठे। श्री सरल ने कहा कि **देश में कोई संस्था देशभक्त युवक बनाती है तो उसका नाम गुरुकुल है।** उन्होंने कहा कि गुरूकुल एवं आर्यसमाज ऐसी संस्थायें हैं जिन्होंने देश की उन्नति के लिए अपने अनुयायियों के जीवनों को होम कर दिया। गुरुकुल हमें जीवन जीने का ढंग बताते हैं। हमारे गुरुकुलों के आचार्यो को अपने देश व इसके मौलिक धर्म वैदिक धर्म व संस्कृति की चिन्ता है। उन्होंने कहा कि इतिहास में आर्यसमाज को देश का उत्थान करने वाली एकमात्र संस्था के रूप में जाना जायेगा।

श्री सत्यपाल सरल ने जो भजन प्रस्तुत किया उसके बोल थे– **'दोस्तो तुम हमें लाख रोको, नींद से हम जगाते रहेंगे।'** इसकी एक पंक्ति यह भी थी **'महर्षि की सदाकत को देखो। उसकी हिम्मत व जुररत को देखो।। शिष्य हम भी उसी ऋषि के हैं। जख्म सीने पे खाते रहेंगे।।'** आयोजन में पौंधा क्षेत्र के भाजपा विधायक श्री सहदेव सिंह पुण्डीर भी उपस्थित थे। उन्होंने गुरुकुल को तीन लाख रूपये की धनराशि प्रदान करने का आश्वासन दिया और आगे भी सहायता का आश्वासन दिया है। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने उनका भी शाल ओढ़ाकर सम्मान किया। अपने स्वागत के उपलक्ष्य में धन्यवाद भाषण में उन्होंने कहा कि हमें अपनी युवा पीढ़ी को नशे और अन्य बुरे मार्ग पर जाने से बचाना है। जो शिक्षा गुरुकुल से मिलती है वह कहीं से नहीं मिलती। उन्होंने कहा कि आप यहा पौंधा में जो संस्कारशाला चला रहे हैं उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मैं कामना करता हूं कि इस क्षेत्र में आपकी संस्कारों की पाठशाला आगे बढ़े, उन्नत हो तथा समाज का वातावरण शुद्ध और पवित्र हो।

श्री वीरपाल विद्यालंकार ने अपने सम्बोधन में कहा कि गुरुकुल के ऊपर सवाल खड़े हैं। आधुनिक शिक्षा के ऊपर समस्यायें खड़ी हैं। समस्याओं का उत्तर तो हो सकता है परन्तु समाधान नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि देश के स्कूलों के बच्चे बिगड़ रहे हैं वहीं हमारा यह गुरुकुल मात्र पन्द्रह हजार रूपये वार्षिक व्यय करके देश के कर्णधार बना रहा है। आप गुरुकुल का सहयोग करेंगे तो राम व कृष्ण का निर्माण हो सकता है। स्कूलों व अन्यत्र बच्चे बिगड़गें ही, वहां बनने का कोई अवसर नहीं है। **उन्होंने कहा कि कालेज का प्राध्यापक बनाना गुरुकुल की सफलता नहीं है जब तक कि वह प्राध्यापक सर्वत्र वैदिक विचारधारा और गुरुकुल की पहचान नहीं बनाता।**

श्री धर्मवीर शास्त्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमें मनुष्य जीवन मिला है। हम पशु–पक्षी नहीं बने यह भी हमारा सौभाग्य है। हम मनुष्य बनकर पशु पक्षी आदि निम्न योनियों के दु:खों से बच गये। हम इस महान् देश आर्यावर्त्त भारत में जन्में यह भी हमारा सौभाग्य है। राम व भरत जैसा भाईयों में प्यार हो, ऐसा देश विश्व में भारत के सिवा और कोई नहीं है। हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य यह है कि हमें महर्षि दयानन्द जैसा गुरु मिला है जिसके समान संसार का कोई गुरु नहीं है। यह भी हमारा सौभाग्य है कि हम महर्षि दयानन्द जी के कार्यो को आगे बढ़ाने वाले गुरुकुलों के संचाालक स्वामी प्रणवानन्द जी से मिले हैं। इसके बाद एक विद्वान् श्री चतरसिंह नागर ने अपने सम्बोधन में कहा कि सभी आगन्तुक गुरुकुल से प्रकाशित मासिक पत्रिका आर्ष–ज्योति के ग्राहक बने, इससे हम गुरुकुल से जुड़ेंगे। उन्होंने कहा कि हम अपने पारिवारिक जनों की अस्थियां गंगा आदि नदियों में डॉलकर उसे अपवित्र न करें। मृतक के शव पर बिना विचार किए बड़ी संख्या में चादरे न डॉलें। इसके स्थान पर हवन सामग्री व शुद्ध घृत का योगदान करें। इसके बाद आर्यजगत् के विख्यात धनिक ठाकुर विक्रम सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिन दिनों मैं खतौली में कक्षा ८ में पढ़ता था तब मैंने मंच पर विराजमान इन पं. ओम् प्रकाश वर्म्मा जी के भजनों को सुना था। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी दिशाहीन है। हमें देश के युवाओं को सम्भालना है।

द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून की आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा जी ने कहा कि गुरुकुल की शिक्षा के कारण यह देश विश्व का गुरु कहलाता है। उन्होंने कहा कि मनुस्मृति के अनुसार भारत विश्व को चरित्र का पाठ पढ़ाता था। पर्वतों की गुफाओं तथा नदियों के संगमों पर ब्रह्मवेता ज्ञानी व तपस्वियों का निर्माण भारत में होता था। आज वह प्राचीन शिक्षा व दीक्षा प्रचलन में नहीं है। शिक्षा आजकल पैसा कमाने तक सीमित है। गुरुकुलों की शिक्षा ईश्वर के ज्ञान, आत्म ज्ञान व आत्मा के उत्थान के लिए है। उन्होंने कहा कि वेद सम्मत धर्म और संस्कृति की शिक्षा देश में होनी चाहिये। गुरुकुल की शिक्षा से ही आत्म–साक्षात्कार हो सकता है और इससे ही त्यागी व तपस्वी मनुष्य बन सकते हैं। इसके लिए उन्होंने गुरुकुलीय शिक्षा को सुदृढ़ बनाने व इस कार्य में सहयोग करने की अपील की।

सत्र के समापन पर अध्यक्ष श्री ओम् प्रकाश वर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि मुझे आर्यसमाज का प्रचार करते हुए ६९ वर्ष हो गये हैं। दो वर्ष पहले मैंने प्रचार कार्य से अवकाश लिया है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने जो गुरुकुल खोले उनसे लाभ हुआ है। गुरुकुल के स्नातक पं. बुद्धदेव विद्यालंकार का उन्होंने उल्लेख किया और बताया कि उनकी शिक्षा पं. लेखराम जी की धर्मपत्नी माता लक्ष्मी देवी द्वारा दिये गये दान से हुई थी। माता लक्ष्मी देवी जी ने अपनी सारी पूंजी गुरुकुल कांगड़ी को दान कर दी थी। यदि आप भी किसी बच्चे को पढ़ा सकें तो पढ़ा देना। दान से ही पं. बुद्धदेव हमें मिले थे जिन्होंने अनेक शास्त्रार्थ कर वैदिक धर्म की कीर्ति को अक्षुण रखा है। गुरुकुल में दान देने से यह लाभ होता है। आपने पं. चमूपति जी के जीवन का प्रसंग सुनाया और कहा कि महर्षि दयानन्द का कीर्तिगान करने के कारण उन्हें बहावलपुर की मुस्लिम रियासत के अपने जन्म स्थान से निकाल दिया गया था। वह गृह त्याग कर लाहौर आ गये थे और जीवन भर आर्यसमाज की प्रशंसनीय सेवा की। पं. ओम् प्रकाश वर्मा जी ने सत्र में बोलने वाले सभी वक्ता व विद्वानों की प्रशंसा की और कहा कि आपके सहयोग से यह आयोजन सफल रहा।

इसके बाद लोगों ने भोजन किया और कुछ अन्तराल पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने व्यायाम, जिमनास्टिक व जूडों-कराटे आदि अनेकानेक प्रकार के करतब प्रस्तुत किए जिससे श्रोता व दर्शक भाव विभोर हो गये। यह प्रदर्शन रोमांचकारी व अविश्वसनीय से दिखने वाले थे जिसे देखकर आश्चर्य के साथ प्रसन्नता हो रही थी। ऐसे प्रदर्शन केवल गुरुकुल में ही सम्भव है। आजकल के स्कूल व कालेजों के बस की बात नहीं कि वह गुरुकुलों के समान व्यायाम आदि अनेक असम्भव से प्रदर्शन कर सकें। आयोजन स्थल पर बहुत से पुस्तकों के स्टाल लगे थे। यज्ञ कुण्ड व यज्ञ में प्रयोग की जाने वाली सामग्री भी कुछ स्टालों पर उपलब्ध थी। लोगों ने अपनी पसन्द का साहित्य व अन्य सामान खरीदा। कई एकड़ का गुरुकुल का परिसर बाहर से आये व स्थानीय लोगों से पूरी तरह भरा हुआ था। पूर्व वर्षों से अधिक संख्या में लोग गुरुकुल के इस वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए। इस आयोजन में सभी विद्वानों व ऋषि भक्तों सहित स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, डॉ. धनंजय आर्य, श्री चन्द्रभूषण आर्य, डॉ. यज्ञवीर,डॉ. रवीन्द्र आर्य, ब्रह्मचारी अजीत आर्य, ब्रह्मचारी शिवदेव सहित गुरुकुल के सभी ब्रह्मचारियों का कार्यक्रम की सफलता में मुख्य योगदान रहा। हमारी दृष्टि में इस बार का उत्सव गुरुकुल के इतिहास में एक नया कीर्तिमान उत्पन्न करने वाला उत्सव रहा।

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय कार्यशाला

गुरूकुल के १७ वें वार्षिकोत्सव का एक अन्य आकर्षण यहाँ ३० मई से ३ जून तक आयोजित सत्यार्थप्रकाश स्वाध्याय कार्यशाला थी जिसका आयोजन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से किया गया। सभा के अधिकारी व प्रतिनिधि श्री सुखदेव सिंह आर्य कार्यशाला के सभी सत्रों में अधिकारी व प्रशिणार्थी, दोनों रूपों में विद्यमान रहे। कार्यशाला के मुख्य वक्ता आर्यजगत के शीर्ष विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) एवं डॉ. रघुवीर वेदालंकार थे। कार्यशाला के आरम्भ में सत्यार्थप्रकाश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के साथ सत्यार्थप्रकाश के विगत १४१ वर्षों का इतिहास प्रस्तुत किया और सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय व इससे होने लाभ पर अपने महत्वपूर्ण सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये। इसके साथ ही चार दिनों में सत्यार्थप्रकाश के षष्ठ से लेकर दशवें वें समुल्लास पर्यन्त व्यापक रूप से चर्चा-परिचर्चा कर डॉ. सोमदेव जी तथा रघुवीर वेदालंकार ने इसमें वर्णित सभी विषयों का ज्ञान अपनी सरल व सुबोध भाषा में श्रोताओं में समाविष्ट किया। कार्यक्रम पूर्णतः सफल रहा। भविष्य में इसी प्रकार की कार्यशाला आयोजित करने की सभी प्रतिभागियों की ओर से मांग की गई, इसके आधार पर आचार्य डॉ. धनंजय जी ने आश्वसन दिया किया कि अग्रिम वर्ष में भी सत्यार्थ-प्रकाश स्वाध्याय कार्याशाला का आयोजन किया जायेगा।

योग साधना शिविर

वार्षिकोत्सव के आयोजन पर द्वितीय आकर्षण योग साधना शिविर का रहा। जिसका आयोजन २५ मई से २ जून २०१६ तक किया गया। योग साधना शिविर स्वामी अमृतानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शिविर का संयोजन श्री अमृतमुनि वानप्रस्थी जी ने की। जिसमें योग दर्शन का अध्ययन स्वामी अमृतानन्द सरस्वती जी ने कराया तथा साथ ही क्रियात्मक योग ध्यान साधना का भी प्रशिक्षण दिया।

-१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून

अभिनन्दनम्

आहुति देकर विश्व कल्याण की कामना

श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा का वार्षिकोत्सव

प्रकृति के नियमों का पालन कर जिएं जिंदगी

पौंधा स्थित श्रीमद् दयानंद आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल में चल रहे सामवेद परायण महायज्ञ में आहुति देते श्रद्धालु व ब्रह्मचारी। जागरण

- श्रीमद् दयानंद आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौंधा में सामवेद परायण महायज्ञ

हमें नित्य ही परमात्मा की उपासना करनी चाहिए और पाखंड से बचना चाहिए। क्योंकि, पाखंड से ... के साथ दूसरों को भी हानि होती है। डॉ. ... ने कहा कि मनुष्य के जीवन को ... किए जाते हैं। वहीं, ...

भारतीय संस्कृति के संपोषक है गुरुकुल

अमर उजाला ब्यूरो

- गुरुकुल पौंधा का वार्षिकोत्सव हुआ सम्पन्न

विकासनगर। गुरुकुल पौंधा में चल रहे पारायण महायज्ञ और वार्षिकोत्सव का रविवार को ... के बीच ...

स्थान प्राप्त कर ...

वेदों में छिपा है समस्याओं का समाधान

गुरुकुल पौंधा में चल रहे योग और सत्यार्थ प्रकाश शिविर का समापन

विकासनगर। पौंधा स्थित श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल में चल रहे योग शिविर और सत्यार्थ प्रकाश शिविर का बृहस्पतिवार को समापन हो गया। गुरूकुल के ब्रह्मचार्यों ने सामवेद के मंत्रों से हवन किया। ... डॉ. सोमदेव शास्त्री की देखरेख में संपन्न हुआ। स्वामी ... नंद सरस्वती ने कहा कि मनुष्य को मोक्ष ...

योगाभ्यास करता ...

डॉ. रघुवीर वेदालंकार ने भी विचार रखे। आचार्य डॉ. धनंजय ने बताया कि पांच जून को ...

... से मुक्ति का साधन है योग'

- महायज्ञ, सत्यार्थ प्रकाश और योग साधना शिविर का हुआ शुभारंभ
- ... में छह राज्यों से ... है हिस्सा

मनुष्य इन ... को धारण ...

... आर्य डॉ. धनंजय ... उत्ता पर प्रकाश ... कहा कि भारत में ... से योग होता आ रहा ... से मनुष्य का तन और ... है। जिससे ...

... में आयोजित हवन में आहुति डालते लोग

पंजीयन संख्या : UTTBIL/2008/235/23546 डाक पंजीयन नं. : UA/DO/DDN/397/2016-2018

पतंजलि®

प्रकृति का आशीर्वाद

करोड़ों देशवासियों का भरोसेमन्द हर्बल टूथपेस्ट

दन्त कान्ति

दन्त कान्ति के लाभ

- ✓ लौंग, बबूल, नीम, अकरकरा, तोमर, बकुल आदि बेशकीमती जड़ी बूटियों से निर्मित दन्त कान्ति, ताकि आपके दाँतों को मिले लंबी उम्र व असरदार प्राकृतिक सुरक्षा।
- ✓ पायरिया, मसूड़ों की सूजन, दर्द व खून आना, सेंसिटिविटी, दुर्गन्ध एवं दाँतों के पीलेपन आदि को दूर करे।
- ✓ कीटाणुओं से लम्बे समय तक बचाकर दे दाँतों को प्राकृतिक सुरक्षा कवच।

पूरी दुनिया अब नैचुरल प्रोडक्ट्स को अपना रही है
आप भी पतंजलि के नैचुरल प्रोडक्ट्स अपनाइए और प्रकृति का आशीर्वाद पाइए

आवाहन– राष्ट्र के जागरुक व्यापारियों व ग्राहकों से हम विनम्र आवाहन करते हैं कि करोड़ों देश भक्त भारतीयों की तरह, आप भी पतंजलि के उत्पादों को अपनी दुकानों व दिलों में सर्वोच्च प्राथमिकता देकर जन–जन तक पहुँचाएं और देश की सेवा व समृद्धि में योगदान दें। जिससे महात्मा गाँधी, भगत सिंह व राम प्रसाद बिस्मिल आदि सभी महापुरुषों के स्वदेशी अपनाने के सपने को मिलकर साकार कर सकें।

पतंजलि आयुर्वेद के लगभग 500 उत्पाद हैं, ये शुद्ध खाद्य उत्पाद व हर्बल सौन्दर्य उत्पाद हमारे पतंजलि स्टोर्स के साथ ओपन मार्केट की दुकानों पर भी उपलब्ध हैं।

मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वामी : आचार्य धनञ्जय द्वारा श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ-गुरुकुल, दून वाटिका-2 पौंधा, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित एवं जयरति ऑफसेट स्क्रीन प्रिन्टर्स, 35 कांवली रोड, देहरादून से मुद्रित।